अंक – 15 वर्ष – 2023-24

सेनानी

हिंदी गृह पत्रिका

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता – 700097

दूरभाष – 033-23350052

ई-मेल – dir-bpore@esic.nic.in, ol-barrackpore.wb@esic.nic.in

हार न अपनी मानूँगा

गोपालदास नीरज

हार न अपनी मानूँगा मैं!
चाहे पथ में शूल बिछाओ
चाहे ज्वालामुखी बसाओ,
किंतु मुझे जब जाना ही है—
तलवारों की धारों पर भी,
हँस कर पैर बढ़ा लूँगा मैं!
हार न अपनी मानूँगा मैं!

मन में मरु-सी प्यास जगाओ,
रस की बूँद नहीं बरसाओ,
किंतु मुझे जब जीना ही है—
मसल-मसल कर उर के छाले,
अपनी प्यास बुझा लूँगा मैं!
हार न अपनी मानूँगा मैं!

चाहे चिर गायन सो जाए,
और हृदय मुर्दा हो जाए,
किंतु मुझे अब जीना ही है—
बैठ चिता की छाती पर भी,
मादक गीत सुना लूँगा मैं!
हार न अपनी मानूँगा मैं!

सेनानी

अंक – 15 वर्ष – 2023-24

संरक्षक	श्री अमरनाथ तिवारी संयुक्त निदेशक (प्रभारी)	
संपादक	श्री रमेश साव सहायक निदेशक (राजभाषा)	
कार्यकारी संपादक	श्री मनोज कुमार वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	
उप संपादक	श्री भागीरथ साव कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	
विशेष सहयोग	श्री रवि कहर बहुकार्य कार्मिक	

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक, कोलकाता - 700097

(केवल आंतरिक परिचालन के लिए)

सेनानी

अंक – 15 वर्ष – 2023-24

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	संरक्षक की कलम से	6
2	संदेश	8
3	संदेश	9
4	संदेश	10
5	संपादकीय	11
6	साक्षात्कार	13
7	लेख / आलेख	19
8	यात्रा वृतांत	34
9	कविता	52
10	हंसी के फव्वारे	68
11	राजभाषा शाखा के विविध क्रिया-कलाप व उपलब्धियां	69
12	कार्यालय में आयोजित विविध गतिविधियां	91
13	कुछ महत्वपूर्ण पत्र - परिपत्र	101
14	चित्र – विथिका	107

सेनानी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं । सम्पादन समिति उनसे सहमत हों, यह आवश्यक नहीं है ।

पत्रिका में इंटरनेट पर उपलब्ध चित्रों का साभार प्रयोग किया गया है ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI
सेक्टर-III, सॉल्ट लेक
कोलकाता - 700097

श्री अमरनाथ तिवारी

संरक्षक की कलम से ..

"सेनानी" के 15वें अंक को आपके कर-कमलों में सौंपते हुए मुझे काफी सुखद अनुभूति हो रही है।

वस्तुत: इस वित्तीय वर्ष 2023-24 में हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के दौरान **"सेनानी"** के 14वें अंक का प्रकाशन राजभाषा विशेषांक के रूप में किया गया था और पुनः इसी वर्ष **"सेनानी"** के दूसरे अंक (15वें) का प्रकाशन करना अपने आप में अहम बात है । ऐसी कोशिश इसलिए भी की गई कि हिंदी की श्रेष्ठ पत्रिकाओं के लिए राजभाषा विभाग ने पुरस्कार हेतु जो मापदंड बनाए हैं, उनमें से एक शर्त यह भी होती है कि एक वित्तीय वर्ष में पत्रिका के दो अंकों का प्रकाशन किया जाए । उसी को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष **"सेनानी"** के इस दूसरे अंक का सफल प्रकाशन एक गौरव की बात है।

"सेनानी" मात्र एक गृह पत्रिका नहीं बल्कि यह हमारे कार्यालय के कार्यकलापों का दर्पण है और साथ-ही, भारत सरकार के राजभाषा नीति के प्रचार-प्रचार की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी है । साथ-ही-साथ, **"सेनानी"** हमारे कार्यालय के अधिकारियों व कार्मिकों की एक रचनात्मक अभिव्यक्ति भी है। **"सेनानी"** का पिछले 15 वर्षों से निरंतर प्रकाशन इस बात का परिचायक है कि "ग" क्षेत्र में स्थित निगम के इस कार्यालय में भी अधिकारियों व कार्मिकों में हिंदी के प्रति गहरी रुचि व अटूट निष्ठा और समर्पण है । वस्तुत: यह गर्व और अभियान की बात है ।

विविध, सुंदर और सुरुचिपूर्ण रचनाओं को अपने दामन में समेटे **"सेनानी"** का यह अद्भुत 15 वां अंक भी आपकी मधुर स्मृतियों में अनंत काल तक बस रहेगा और आपसे यह अपेक्षा भी है कि आप नि:संकोच एवं निष्पक्ष भाव से अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि पत्रिका के आगामी अंक को हम और भी परिमार्जित रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत कर सकें।

अंत में, **"सेनानी"** के इस अंक को हम सभी के समक्ष लाने में मैं राजभाषा शाखा की कड़ी मेहनत, समर्पण और भरपूर सफल प्रयास की सराहना करता हूं और धन्यवाद देता हूं ।

(अमर नाथ तिवारी)
संयुक्त निदेशक (प्रभारी)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI
सेक्टर-III, सॉल्ट लेक
कोलकाता - 700097

श्री देबाशीष बरूआ

संदेश

"सेनानी" के 15वें अंक का प्रकाशन उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर परिवार की एक शानदार उपलब्धि है ।

निगम के "ग" क्षेत्र में स्थित यह कार्यालय काफी समय से राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने को सतत् प्रयत्नशील रहा है और **"सेनानी"** के 15वें अंक का प्रकाशन कार्यालय में हिंदी प्रगति से संबंधित किए जा रहे अनवरत् प्रयास की ही एक कड़ी है ।

मुझे विश्वास है, कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में **"सेनानी"** उपयोगी साबित होगी तथा हमारे अधिकारियों व कर्मचारियों को अपने कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु प्रेरणा भी प्रदान करेगी ।

"सेनानी" के स्वर्णिम भविष्य हेतु मेरी शुभकामनाएं -

(देबाशीष बरूआ)
उप निदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI
सेक्टर-III, सॉल्ट लेक
कोलकाता - 700097

श्री मृदुल चक्रवर्ती

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की हिंदी गृह पत्रिका **"सेनानी"** के 15वें अंक (वर्ष – 2023-24) का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है ।

"सेनानी" में विविध सुंदर, सारगर्भित व पठनीय रचनाओं का समावेश है जो अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करती है । इससे भारत वर्ष के पूर्वी क्षेत्र में स्थित हिंदीतर राज्य में हिंदी के प्रति एक सकारात्मक माहौल भी तैयार हो रहा है।

"सेनानी" के माध्यम से राजभाषा की अखंड ज्योति निरंतर जलती रहे - इन्हीं शुभकामनाओं के साथ –

(श्री मृदुल चक्रवर्ती)
सहायक निदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI
सेक्टर-III, सॉल्ट लेक
कोलकाता - 700097

श्री मृत्युंजय प्रभाकर

संदेश

बहुत ही खुशी की बात है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर अपनी हिंदी गृह पत्रिका **"सेनानी"** के 15वें अंक का प्रकाशन कर रहा है ।

"सेनानी" एक ऐसा मंच है जिसमें उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के अधिकारियों व कर्मचारियों की अभिरुचि, सृजनात्मकता, भाव मंथन आदि प्रदर्शित होता है ।

हिंदी पत्रिका ही वह माध्यम है जो कार्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों की सृजनात्मकता एवं साहित्यिक अभिरुचियों को अभिव्यक्त करने में एक सशक्त मंच प्रदान करती है ।

"सेनानी" के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ-साथ पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

शुभकामनाओं सहित –

(मृत्युंजय प्रभाकर)
सहायक निदेशक

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर
जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI
सेक्टर-III, सॉल्ट लेक
कोलकाता - 700097

श्री रमेश साव

संपादकीय

राजभाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार एवं कार्यान्वयन के दृढ़ संकल्प से कार्यरत राजभाषा शाखा, उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा वर्ष 2023-24 के दौरान वार्षिक राजभाषा पत्रिका सेनानी के 15 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । यह पहली बार है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में एक वित्तीय वर्ष के दौरान राजभाषा पत्रिका का दूसरा अंक भी प्रकाशित किया गया है ।

इससे पहले वाला अंक हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के दौरान राजभाषा विशेषांक के रूप में विमोचित किया गया था । एक वर्ष में राजभाषा पत्रिका के दूसरे अंक का प्रकाशन करने का प्रयास राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुपालन में किया गया है । इस प्रयास के लिए उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की राजभाषा शाखा की टीम तथा इस पत्रिका में अपनी रचनाएं देकर इसे समृद्ध बनाने वाले उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के कर्मचारीगण साधुवाद के पात्र है । सभी के सामूहिक प्रयास से ही इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका है ।

राजभाषा पत्रिकाएं किसी भी कार्यालय के कर्मचारियों को अपनी साहित्यिक अनुभूतियों को उजागर करने के लिए एक प्लैटफार्म प्रदान करने का कार्य करती है। सेनानी का यह अंक भी अपनी इस भूमिका को निर्वाह करने के लिए प्रयासरत रहा है । इस पत्रिका में विभिन्न कर्मचारियों की साहित्यिक अनुभूतियों, यात्रा अनुभवों तथा चित्रांकन की प्रतिभाएं उजागर हुई हैं । इस पत्रिका में सितंबर 2023 से मार्च 2024 तक की राजभाषा गतिविधियों एवं कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों को दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए दृढ़ता से कार्य कर रही है। बैरकपुर में हम प्रशिक्षण का प्रतिशत बढ़ाने एवं इस लक्ष्य को जल्द से जल्द प्राप्त करने की दिशा में कार्य कर रहे हैं । पश्चिम बंगाल ग क्षेत्र में अवस्थित है अपितु जिस अनुपात में राजभाषा हिंदी में कार्य करने का प्रयास इस कार्यालय में किया जा रहा है वह सराहनीय है और इस उपलब्धि का श्रेय यहां के कर्मचारियों, प्रबंधन तथा राजभाषा की टीम को जाता है ।

पश्चिम बंगाल की माटी ने सदैव से ही हिंदी भाषा को फलने-फूलने तथा विकसित होने के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करने का कार्य किया है और इसी की देन है कि ग क्षेत्र के अन्य कार्यालयों से पश्चिम बंगाल के कार्यालयों की स्थिति राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से थोड़ी बेहतर है । हालांकि हम राजभाषा विभाग द्वारा दिए गए लक्ष्यों को प्राप्त कर पाने में सफल हो रहे है परन्तु हमें रुकना नहीं है, हमें नियमित रूप से कार्य करना है एवं उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के लिए नए कीर्तिमान स्थापित करना है और इस कार्य में उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के समस्त कार्मिकों का परस्पर सहयोग आवश्यक है ।

पत्रिका का यह अंक ई-पत्रिका के तौर पर प्रकाशित की जा रही है । यह अंक आपको सौंपते हुए अपार गर्व की अनुभूति हो रही है । हालांकि इस पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास किया गया है अपितु सुधार की गुंजाइश सदैव रह जाती है । अतः सभी सुधी पाठक जनों से अनुरोध है कि वे अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत कराएं जिससे आने वाले अंकों को और बेहतर बनाया जा सके।

(रमेश साव)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

साक्षात्कार

डॉ. राजीव रावत से एक भेंटवार्ता

डॉ राजीव रावत
वरिष्ठ हिंदी अधिकारी
भारतीय प्रौद्योदिकी संस्थान, खड़गपुर

रमेश साव - अपने बारे में तथा राजभाषा क्षेत्र में अपने अनुभव के बारे में बताएं।

श्री रावत जी - मैं मूलतः विज्ञान का छात्र रहा फिर भारतीय वायु सेना में रेडियो तकनीशियन रहा। राजभाषा के क्षेत्र में, वायु सेना में रहते हुए रोजगार की तलाश में आ गया हूँ। कुछ समय तक नागपुर के एलएडी महाविद्यालय में संविदा पर राजनीति शास्त्र का प्रवक्ता रहा हूँ जहां मैं एमए की कक्षाए लेता था। वर्ष 2005 में फील्ड गन फैक्टरी कानपुर में हिन्दी अनुवाद नियुक्त हुआ तत्पश्चात् वर्ष 2009 में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान खड़गपुर में हिन्दी अधिकारी नियुक्त हुआ। वर्ष 2009 से अब तक खड़गपुर में ही हूँ और राजभाषा के क्षेत्र में यथासंभव अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास कर रहा हूँ। संस्थान के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी दायित्वों के अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति खड़गपुर का सदस्य सचिव हूँ। नराकास राजभाषा के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करते रहने के लिए बहुत अच्छा मंच है। राजभाषा के क्षेत्र में काम करने का अनुभव बहुत अच्छा रहा है। यह मात्र भाषाई अथवा रोजगार संपन्न हो जाने का प्रश्न नहीं है बल्कि यह हमें अपनी संस्कृति, धरोहर से भी जोड़ने का माध्यम बनता है तथा देश के सुखद भविष्य की सुदृढ़ आधारशिला रखने का भी सुअवसर प्रदान करता है। भाषा के माध्यम से हम न कि मात्र सरकारी कर्मचारियों से जुड़ते हैं बल्कि विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्रों एवं आचार्यों से भी संपर्क होता है और उनके साथ भी काम करने के अवसर मिलते हैं। इस प्रकार राजभाषा के क्षेत्र में अनुभव बहुत आनंद दायक रहा है एक ओर कार्यालयों में हिन्दी में काम करना सिखाना, प्रशिक्षण, कार्यशालाएं, हिन्दी दिवस आदि जैसे आयोजन हैं वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों में निबंध, काव्य पाठ, सुलेख, कहानी लेखन, अंत्याक्षरी, वाद-विवाद, साहित्यकार प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं के आयोजन से भाषाई चेतना जाग्रत करने के भी असीमित अवसर मिले हैं।

जब आप काम करते हैं तो चुनौतियां भी आती हैं जिनसे जूझने में आनंद भी आता है और सफलता भी मिलती है। यदि किसी कारणवश असफलता भी मिलती है तो मुझे उसमें और कोई नया अवसर दिखता है, सीखने का अवसर होता है, कमियों की समीक्षा करता हूँ और मैं फिर नए सिरे से काम करता हूँ।

रमेश साव - वर्तमान समय में राजभाषा कार्यान्वयन में 'ग' क्षेत्र में कार्य करते हुए क्या समस्याएं आती है एवं उनका निदान क्या हो सकता है ?

श्री रावत जी - राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विशेषतौर पर 'ग' क्षेत्र में कई समस्याएं हैं। कुछ सामान्य समस्याएं हैं और कुछ क्षेत्र विशेष होने के कारण होती हैं किंतु उनका समाधान निश्चित ही संभव होता है। उदाहरण के लिए मैं कुछ विशिष्ट बिंदुओं की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा।

1. 'ग' क्षेत्र में हमारे कार्मिकों को राजभाषा में काम करने के लिए हिन्दी भाषा का पर्याप्त एवं उपयुक्त ज्ञान नहीं होता है। अगर हम बंगाल की बात करें तो कह सकते हैं कि यद्यपि बांग्ला और हिन्दी सहोदरी हैं क्योंकि दोनों में ही संस्कृत के शब्दों की अच्छी संख्या हैं और वे शब्द हिन्दी तथा बंग्ला भाषियों, दोनों को ही अच्छी तरह समझ आते हैं तथापि व्याकरणिक एवं उच्चारण के धरातल पर कुछ व्यवहारिक कठिनाइयां होती हैं जिन्हें कि अध्ययन, अभ्यास और लगन से ही दूर किया जा सकता है। अध्ययन में लगने वाले श्रम और समय का सभी के पास अभाव है और वैकल्पिक तौर पर अंग्रेजी की उपलब्धता होने से परिश्रम से बचने की घातक मानसिकता तो विचारणीय है। एक और महत्वपूर्ण कारण है कि नियमों के अनुपालन का दबाव न होने से निदान नहीं हो पाता है और तदर्थभाव के कारण भाषाई घालमेल होता जा रहा है। इससे राजभाषा कार्यान्वयन एवं नियमों का अनुपालन कराना दुरूह होता जा रहा है।

2. भारत सरकार की अनेक योजनाएं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम हैं जो कि सेवाकालीन होते हैं। बहुधा देखने में आता है कि इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कार्मिक नामांकित तो होते हैं किंतु उनमें प्रशिक्षण के प्रति अरुचि होती हैं इसलिए प्रशिक्षित होने के बाद भी काम अंग्रेजी में ही करते हैं। धीरे-धीरे प्रशिक्षण भी अपनी उपादेयता खो रहा है। भारत सरकार ने प्रशिक्षण पूरा करने के लिए वर्ष 2025 तक का समय दिया है। आशा है इस अवधि के बाद प्रशिक्षण बढ़ाया नहीं जाएगा और सभी को हिन्दी में कार्य करने के प्रति जबावदेह होना होगा।

3. कई बार आधिकारिक दस्तावेज़ों या प्रलेखों का अनुवाद सही नहीं होता और वह विल्कुल किताबी होता है। आपने देखा होगा कितनी ही अच्छी कृतियाँ अच्छे अनुवाद के अभाव में मर जाती हैं और एक भाषाई दायरे में ही सिमट जाती हैं। यह बात सरकारी कार्यालयों पर भी लागू होती है क्योंकि अच्छे अनुवाद के अभाव में हिन्दी में सरकारी पत्राचार भी उबाऊ होता है जिससे अनुवाद प्रक्रिया, अनुवादकों और अनूदित सामग्री के प्रति अरुचि बढ़ जाती है।

मेरा मानना यह है कि अब ऐसी व्यवस्था का समय आ गया है जब अनुवाद का सहारा न लेते हुए सभी को हिन्दी में मूल काम करना चाहिए।

मैं मानता हूँ कि किसी भी भाषा को सीखना आसान नहीं होता लेकिन यहां प्रश्न सरकारी नीतियों का है कि जब सरकारी नीति स्पष्ट हैं तो उनका पालन पूरे मन से किया जाना चाहिए। क्षेत्र चाहे 'क' हो, 'ख' हो अथवा 'ग' हो, मूल समस्या हिन्दी में काम न करने की मानसिकता की है जिसका समाधान करना आवश्यक है।

मेरा प्रयास रहता है कि परस्पर सौहार्द, प्रेरणा और प्रोत्साहन से इसका निदान निकल आए जो कि बहुत मुश्किल है। जब आप राजभाषा हिन्दी में काम करने की बात करते हैं तो आप किसी भी भाषा के विरुद्ध नहीं होते बल्कि भारत सरकार की नीतियों की बात कर रहे होते हैं किंतु ऐसा न समझ कर उसे व्यक्तिगत स्तर पर लिया जाता है यह भी एक बहुत बड़ी समस्या राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन में बन जाती है। विडंबना यह है कि हिन्दी का किसी भी भारतीय भाषा से कोई विरोध नहीं हैं यहां तक कि अंग्रेजी से भी कोई विरोध नहीं है फिर भी हिन्दी का विरोध होता है और अंग्रेजी, जो सभी भारतीय मातृभाषाओं को धीरे-धीरे खत्म कर रही है उस खतरे के प्रति कोई चिंतित नहीं दिखता है। हिन्दी को कोई अनिवार्य नहीं कर रहा फिर भी विरोध होता है और अंग्रेजी स्वतः अनिवार्य होती जा रही है इसके प्रति कोई विमर्श नहीं होता है। यह एक सामान्य बात कह रहा हूँ किसी भी भाषा भाषी के प्रति टिप्पणी नहीं हैं। अनेक गैर हिन्दी भाषी लोगों का हिन्दी को समृद्ध करने में अप्रतिम, अतुलनीय योगदान है जिसके प्रति हम सब कृतज्ञ हैं। सामाजिक मंचों, संचार साधनों पर हिन्दी की उपस्थिति में वृद्धि हुई है और आम समझ बढ़ी है। मेरा अनुभव है कि पिछले 40 वर्षों में 'ग' क्षेत्र में हिन्दी की स्वीकार्यता, दृश्यता, समझ में काफी वृद्धि हुई है किंतु अभी भी अनेक समस्याएं हैं।

इन सब समस्याओं का समाधान आधुनिकतम तकनीक है जो भाषाई बंधनों को तोड़ने में सक्षम है। इसलिए अब राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन 'ग' क्षेत्र में भी आसान है परंतु अभी भी अंग्रेजी की अनिवार्यता असंदिग्ध है इस पर काम होना चाहिए और हमें काम मूल रुप से अपनी मातृभाषाओं में करने की ओर बढ़ना चाहिए जैसे कि विश्व के अनेक शक्तिशाली देश अपना सारा काम, उच्च शिक्षा, शोध, अनुसंधान आदि अपनी मातृभाषाओं में करते हैं ।

रमेश साव - पिछले 10 सालों में राजभाषा कार्यान्वयन के स्वरूप में क्या बदलाव आया है ?

श्री रावत जी - पिछले 10 वर्षों में राजभाषा कार्यान्वयन में कई महत्वपूर्ण बदलाव आये हैं। राजभाषा के क्षेत्र में आए बदलावों को भी जीवनपद्धति एवं कार्यालयों के स्वरुप में आए बदलावों के सापेक्ष ही देखा जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव तकनीक संपन्न होने से है।

आज हर किसी की पहुंच आधुनिकतम तकनीक तक है। कार्यालयों में सबके पास कम्प्यूटर हैं। हमने हाथ से पत्र बनाने से लेकर आज की कृत्रिम मेधा तक का युग बहुत शीघ्रता से आते हुए देखा है इससे राजभाषा कार्यान्वयन के स्वरुप में आमूल-चूल परिवर्तन होना चाहिए था किंतु सकारात्मक परिवर्तन कम हुआ है। कम से मेरा आशय है कि कार्यों का मशीनीकरण तो बढ़ गया है किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हिन्दी में काम बढ़ गया है। मशीनीकरण होने से राजभाषा कार्मिकों के ऊपर दबाव अधिक बढ़ गया है और उनसे अपेक्षाएं बढ़ गई हैं किंतु हिन्दी कार्य का प्रतिशत बहुत नहीं बढ़ा है।

तकनीकी उन्नति से रिपोर्ट भरना, ऑन लाइन प्रेषित करना, कोविड के दौरान ऑनलाइन निरीक्षण होना, समीक्षा होना, कार्यशालाओं एवं व्याख्यानों का ऑनलाइन संपन्न होना आदि शुभ संकेत दिखते हैं और काम आसान हुए हैं। गूगल फार्म आदि से किसी भी कार्यालय की छोटी इकाइयों से रिपोर्ट आदि समय से प्राप्त हो जाती हैं जिनमें पहले पत्राचार में समय लगता था। कार्यालयों में इंटरनेट आगमन से बहुत सारे कागज, प्रिटिंग, प्रेषण, डाक का आवागमन आदि में लगने वाले सप्ताहों, महीनों का समय घटकर एक मिनट से भी कम का रह गया है। आज ई-मेल, वाट्सअप आदि से पत्राचार भी कुछ पलों में होने लगा है, निश्चित ही इससे राजभाषा कार्यान्वयन में भी बहुत सुधार हुआ है किंतु अभी भी काफी कुछ करने को शेष है। राजभाषा कार्मिकों के साथ ही कार्यालय में अन्य अधिकारियों, कार्मिकों को तकनीकी अनुप्रयोग में दक्षता बढ़ानी होगी जिससे कार्यालयों में हिन्दी में कार्य बढ़े और आंकड़ों की तथ्यात्मकता प्रमाणित हो सके। कार्यालयों को अनुवाद के लिए राजभाषा कार्मिकों के ऊपर निर्भरता को भी कम करते हुए अपना कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करना सीखना चाहिए।

रमेश साव - वर्तमान समय में राजभाषा में तकनीकी के प्रयोग को आप कैसे देखते है ?

श्री रावत जी - वर्तमान में तकनीक प्रयोग से राजभाषा के क्षेत्र में अकल्पनीय बदलाव आए हैं। गूगल, लिंग्वानैक्स, एसडीएल ट्रेडोस, मंत्रा आदि मशीन अनुवाद, एआई, गूगल लैंस, ट्रांसलिटरेट, कंठस्थ, अनुवादिनी, अनुसारक आदि अनेक तकनीकी साधनों से राजभाषा का काम आसान हुआ है साथ ही राजभाषा कार्मिकों से तात्कालिकता की अपेक्षाएं भी बढ़ी हैं। तकनीक के प्रयोग से सकारात्मक बदलाव पूरे परिदृश्य में हुआ है और राजभाषा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। राजभाषा कार्मिकों को भी कंप्यूटर अनुप्रयोगों एवं तकनीक का अच्छा ज्ञान हुआ है और वे भी अपनी दक्षता तथा निपुणता में वृद्धि कर रहे हैं।

रमेश साव - तकनीकी का प्रयोग करके कर्मचारियों को कैसे राजभाषा में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ?

श्री रावत जी - आज तकनीक सर्वसुलभ है जैसे कि कोई भी हो उसे मोबाइल का नैटवर्क सुलभ है यह बात अलग है कि सबके मोबाइल की कीमत दूसरों से अलग हो सकती है।

आज तकनीकी अनुप्रयोग सभी के लिए सुलभ हैं इसलिए कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी में काम करने के लिए सहज प्रेरित किया जा सकता है। नियमित प्रशिक्षण सत्र एवं तिमाही कार्यशालाएं इसमें महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा रही हैं। अब कार्यशालाओं में नीति, नियमों के साथ ही अनुवाद तकनीक, कृत्रिम मेधा अनुप्रयोग, राजभाषा विभाग एवं सी-डैक द्वारा विकसित अन्य महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकीय उपकरणों एवं सहायताओं के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण देने से कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

रमेश साव - अनुवाद अधिकारियों , हिंदी अधिकारियों के तकनीकी रूप से सशक्त होने को आप कैसे देखते है ?

श्री रावत जी - यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है रमेश जी। आज यह सबसे सकारात्मक बदलाव देखने में आ रहा है कि अब हिन्दी अधिकारी एवं अनुवाद अधिकारी गण तकनीकी रुप से बहुत सक्षम हो रहे हैं और इससे उनकी कार्यकुशलता तथा प्रवीणता में वृद्धि हुई है। आज नई पीढ़ी के हिन्दी अधिकारी न कि भाषा में बल्कि कम्प्यूटर तकनीकों के अनुप्रयोगों में भी दक्ष हैं, सक्षम हैं । इससे एक तो राजभाषा कार्मिकों के स्वाभिमान में वृद्धि हुई है दूसरे कार्यालयों एवं संस्थाओं की मुख्य धारा के कार्यों में भी सहभागिता बढ़ी है। इसका सुखद परिणाम यह हुआ है कि कार्यालयों में हिन्दी तथा हिन्दी वालों को एक नई पहचान मिल रही है और उनकी योग्यता तथा क्षमता का सदुपयोग हो रहा है। आज राजभाषा कार्मिक अपने राजभाषा क्षेत्र के कार्यों के अतिरिक्त भी अन्य अनेक क्षेत्रों के कामकाज संभाल रहे हैं।

रमेश साव - राजभाषा के कार्यों में तकनीकी के प्रयोग तथा उसमें हिंदी अधिकारियों की भूमिका को आप कैसे देखते है ?

श्री रावत जी - राजभाषा के कार्यों में तकनीक के प्रयोग से हिन्दी अधिकारियों की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि तकनीक के प्रयोग से हिन्दी का काम कार्मिक करने लगे हैं किंतु तकनीक पर निर्भरता से अगंभीरता में भी बढ़ोत्तरी हो रही है। आज दस-बीस पेज अंग्रेजी की सामग्री अनुवाद के लिए देकर यह भी कहा जाने लगा है कि जल्दी अनुवाद कर लाइए। अगर अनुवादक कहते हैं कि समय लगेगा तो यह सुनने को भी मिलने लगा है कि अरे! अब क्या समय लगेगा। गूगल से, कंठस्थ से कर लाएं कौन पढ़ता है ? इस अगंभीरता के कारण कभी-कभी बहुत अप्रिय और घातक स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। मशीन अनुवाद कर सकती हैं किंतु संदर्भ, भाव, भाषाई बोधगम्यता की समझ मशीन में नहीं होती जिससे अर्थ का अनर्थ हो सकता है। राजभाषा के कार्यों में तकनीक प्रयोग से सुविधा तो हुई है किंतु दायित्व बढ़े हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

रमेश साव - कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के मूल मंत्र क्या हो सकते है?
श्री रावत जी - देखिए रमेश जी। आप जानते ही हैं कि नियम 12 के अनुसार कार्यान्वयन का दायित्व कार्यालय प्रमुख का है और राजभाषा कार्मिक इसमें सहायक हो सकते हैं किंतु किसी को बाध्य नहीं कर सकते।

लेख / आलेख

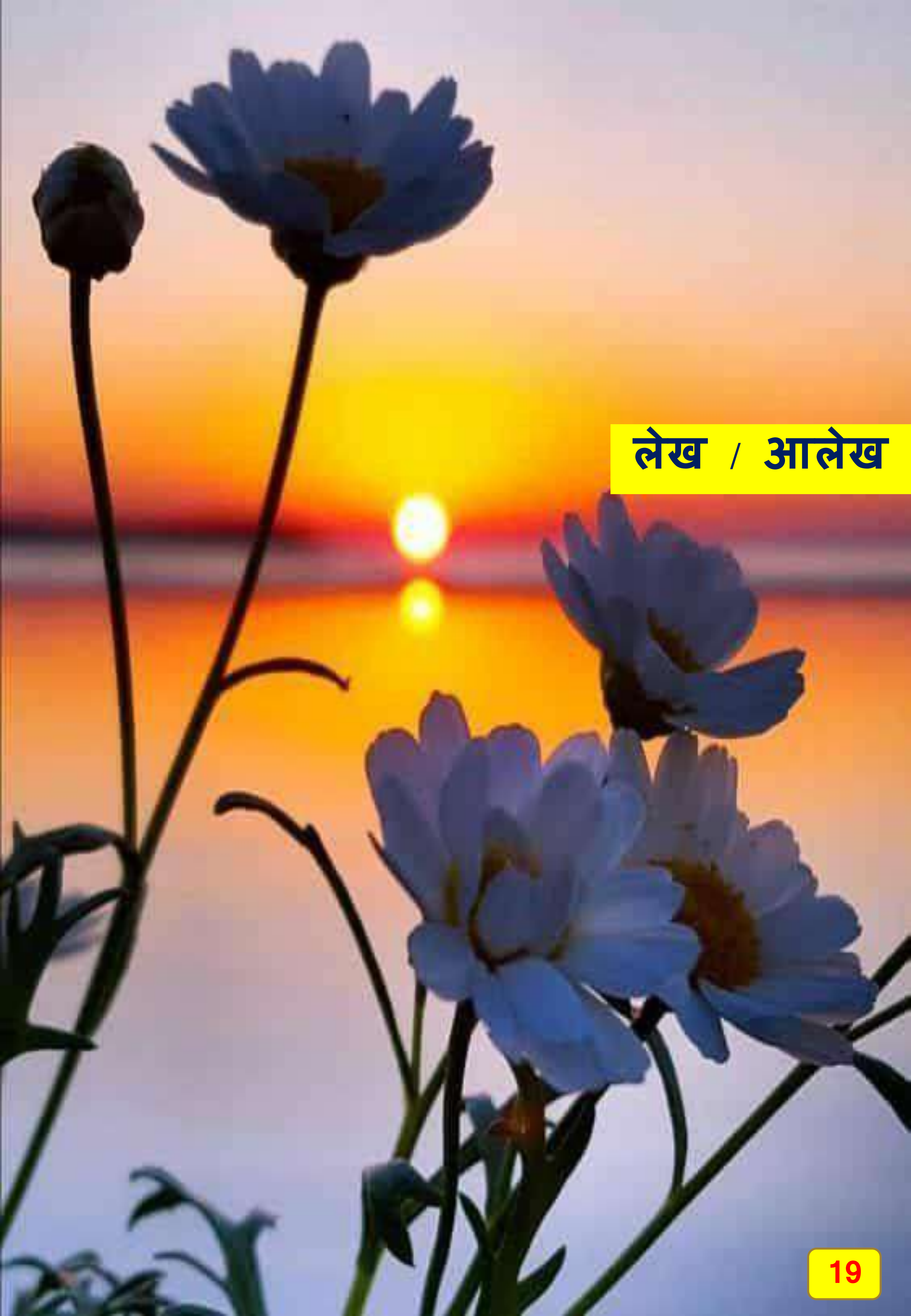

राजभाषा एवं राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग

रमेश साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

वर्तमान समय आधुनिक प्रौद्योगिकी का समय है । तकनीकी के कारण आज विश्व ग्राम की संकल्पना साकार हो रही है । आज हम घर बैठे ही अपने मोबाइल से हर वो काम कर सकते है जिसको करने के लिए पहले हमें घंटों परिश्रम करना पड़ता था । कोविड-19 के दुष्प्रभावों से कहीं न कहीं हर कोई प्रभावित हुआ है परन्तु इस आपदा के समय ने तकनीकी रूप से हमें बहुत कुछ सक्षम भी बना दिया । आज के इस समय में राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य हो या प्रचार-प्रसार का कार्य, तकनीकी के प्रयोग ने उसे और अधिक सुगम बना दिया है । आज तकनीकी का प्रयोग करके बहुत आसानी से हिंदी में कार्य किया जा सकता है एवं अपने कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ।

भारत को आजादी 1947 में मिली तथा सन् 1950 में देश का संविधान लागू हुआ । भारतीय संविधान के भाग-5 अनुच्छेद 351 में यह स्पष्ट रूप से लिखा गया है कि यह संघ का कर्तव्य होगा कि वह हिंदी का प्रचार-प्रसार करें, उसका वृद्धि करें जिससे वह भारत की सामसिक संस्कृति की सब तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा देने के पीछे संविधान निर्माताओं का यही उद्देश्य था एवं उस समय भी यही महसूस किया गया था कि हिंदी ही वह भाषा है जो पूरे भारत को एकता के एक सूत्र में बांधे रखने में समर्थ है । राष्ट्रीय एकता तथा अखंडता को ध्यान में रखकर ही संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप स्वीकार किया । पिछले 75 सालों में देश में बहुत कुछ बदल चुका है आज भारत तकनीकी रूप से बहुत ही आगे निकल चुका हैं एवं समस्त विश्व में अपना लोहा मनवा रहा है । तकनीकी ने हिंदी को भी अछूता नहीं छोड़ा है ।

सन् 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई एवं तब से राजभाषा विभाग ने सदैव ही राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए कार्य किया है । राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों का अनुपालन करते हुए कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने भी अपने स्तर पर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कार्य किया है । कर्मचारी राज्य बीमा निगम के राजभाषा विभाग ने मौजूदा तकनीकी को अपनाया है तथा अपने कार्मिकों उसकी जानकारी देते हुए उन्हें हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से प्रयास किया है ।

आज ऐसे अनेकों सॉफ्टवेयर है जिनका प्रयोग विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने के लिए किया जा रहा है । हिंदी में कार्य करते समय जो सबसे बड़ी समस्या आती है वह हिंदी टंकण की । हालांकि तकनीकी के विकसित होने से आज टंकण विभिन्न रूपों से किया जा रहा है जैसे फोनेटिक टंकण, इंस्क्रीप्ट टंकण, वॉइस टायपिंग आदि । वर्तमान समय में जितने भी कंप्यूटर आ रह् हैं समस्त में फोनेटिक टंकण, इंस्क्रीप्ट टंकण की सुविधा पहले से मौजूद रहती है । फोनेटिक टंकण पर तो कोई भी कर्मचारी एक घंटे अभ्यास करने के पश्चात हिंदी टंकण कर पाने में समर्थ हो जाता है बशर्ते कि उसे हिंदी भाषा का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो । इंस्क्रीप्ट टंकण जिसका प्रशिक्षण राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दी जाती है उसे स्वयं भी निज प्रयासों से सीखा जा सकता है । यह टंकण सीखने के लिए अनेकों सॉफ्टवेयर आज इंटरनेट पर उपलब्ध है । इसके पश्चात अगर गूगल वॉइस टाइपिंग की बात आती है, गूगल की यह सुविधा बोलकर हिंदी टंकण करने में बहुत सहायक है इसका प्रयोग करते हुए बहुत कम समय में अपनी आवाज द्वारा हिंदी टंकण का कार्य किया जा सकता है ।

हिंदी में काम करने में एक और समस्या आती है और वह है अनुवाद की समस्या । वर्तमान समय में अनुवाद के अनेकों वेबसाइट इंटरनेट पर नि:शुल्क सेवाएं प्रदान कर रहे हैं जिनमें से कुछ निम्नवत् हैं -

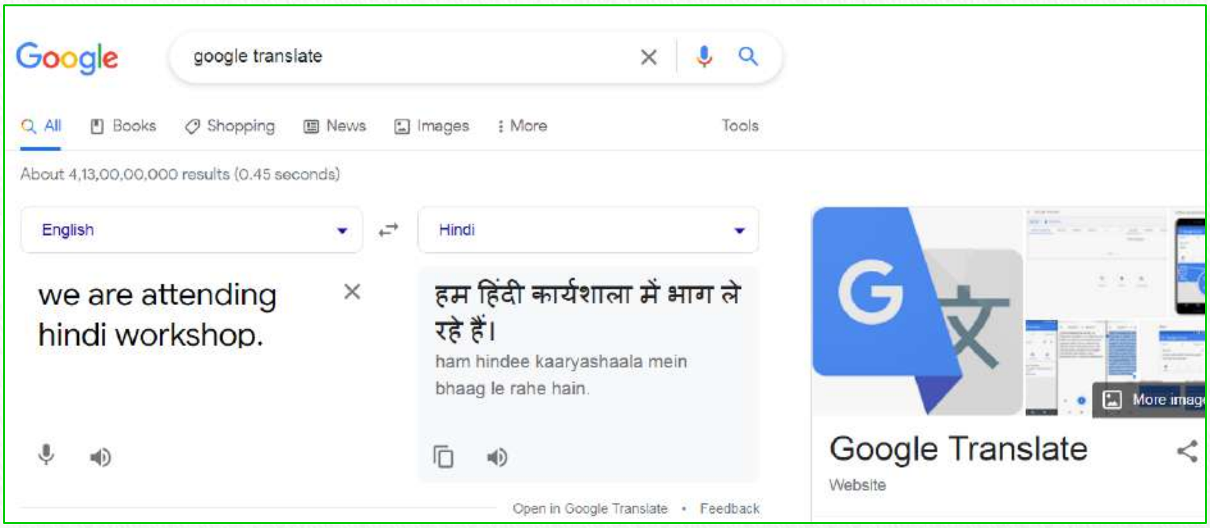

गूगल ट्रांसेलट, माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर आदि का प्रयोग ऑनलाइन अनुवाद के लिए लिया जा सकता है। एक समय था जब इन ऑनलाइन सुविधाओं का प्रयोग करना और उनसे प्राप्त परिणाम प्रायः अर्थ का अनर्थ कर देते थें पर आज ऐसी स्थिति नहीं है । आज इन सुविधाओं के प्रयोग से प्राप्त परिणाम 80 से 90 प्रतिशत तक आपका काम सही-सही कर देते है, किसी-किसी मामले में कभी-कभी 100 प्रतिशत तक भी शुद्धता प्राप्त होती है पर फिर भी चूकि यह एक मशीनी अनुवाद है तो इन पर पूरी तरह से निर्भर करना ठीक नहीं है । अंतिम रूप देने से पहले इन वेबसाइटों पर किए गए कार्यों का एक बार अवलोकन तथा आवश्यक संशोधन करना अनिवार्य होता है । राजभाषा विभाग भी नियमित रूप से राजभाषा हिंदी को सशक्त करने का हर संभव प्रयास कर रहा है । इस वर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान कंठस्थ-2.0 का लोकार्पण किया गया ।

कंठस्थ स्मृति आधारित मशीनी अनुवाद की सुविधा है जिसको प्रयोग में लाने के लिए राजभाषा विभाग के साइट पर पंजीकरण कर लॉग-इन करना अनिवार्य है । राजभाषा विभाग यह सुविधा निःशुल्क प्रदान कर रही है एवं इस सॉफ्टवेयर पर किया गया अनुवाद लगभग पूर्ण रूप से सटीक माना जाता है क्योंकि यह आपके किए हुए अनुवाद को पुनः आपके सामने प्रस्तुत करता है ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी सीखाने के लिए अनेकों ऑनलाइन-ऑफलाइन प्रशिक्षण चलाएं जाते है इसके साथ ही निःशुल्क हिंदी सीखाने के लिए लीला राजभाषा ऐप, हिंदी प्रवाह आदि ऐप राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध करवाएं गए जिसका प्रयोग करके कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा के माध्यम से हिंदी भाषा सीख सकता है । यह ऐप गूगल प्ले स्टोर पर उपलब्ध होने के साथ-साथ इसे राजभाषा विभाग के साइट पर जाकर भी एक्सेस किया जा सकता है ।

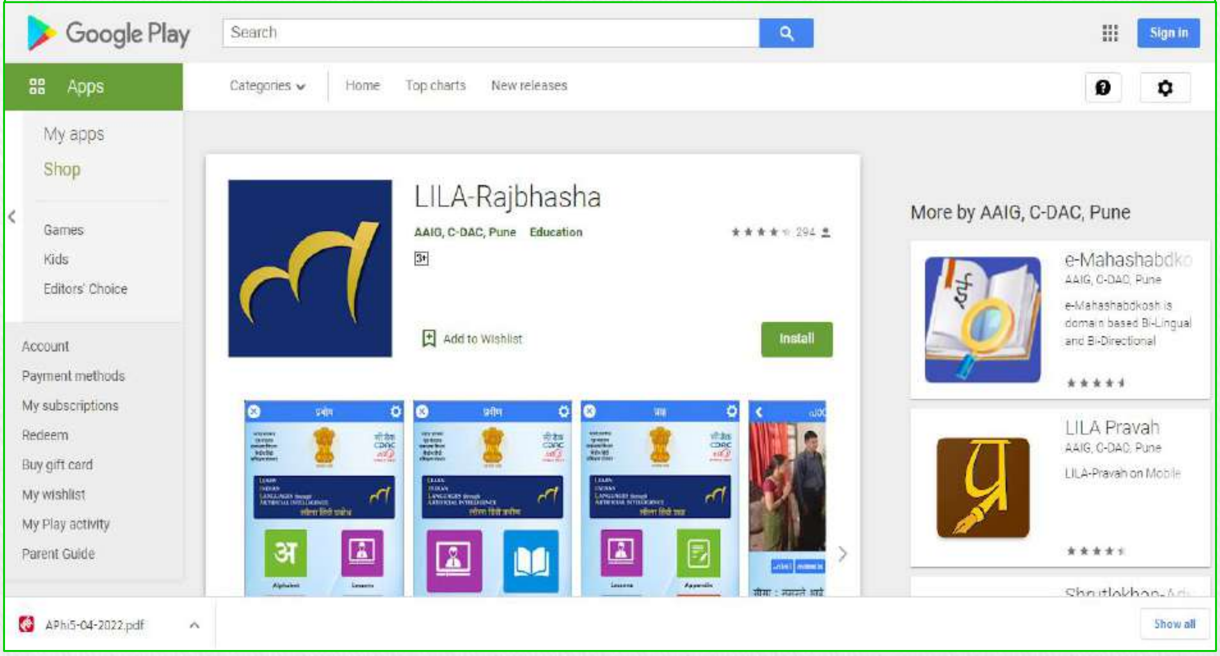

इनके अलावे और भी बहुत सारे ऐप्स, ऑनलाइन डिक्शनरियाँ आदि आज इंटरनेट पर निःशुल्क उपलब्ध है जिनका प्रयोग कर हिंदी सीखा एवं सीखाया जा सकता है बस आवश्यकता है थोड़ी सी लगन एवं धैर्य तथा अभ्यास की । राजभाषा हिंदी आसान है एवं इसे हर किसी को सीखना चाहिए और केन्द्र सरकार का कर्मचारी होने से हम सबका यह संवैधानिक कर्तव्य है कि हम न केवल हिंदी सीखें बल्कि सीखकर अपने कार्यालयी कार्यों में हिंदी को व्यवहार में लाएं ।

"जय श्री राम" – विचारधारा, भक्ति, अंधविश्वास या राजनीति?

कौशिक मण्डल
प्रवर श्रेणी लिपिक
प्रशासन शाखा

"रामायण" (श्री रामचन्द्र की यात्रा) प्राचीन इतिहास में रचित महानतम महाकाव्यों में से एक है । महाकवि महर्षि वाल्मिकी ने इस महाकाव्य के 7 छंदों एवं 2400 श्लोकों में मर्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र (हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार भगवान विष्णु के सातवें अवतार) के संपूर्ण जीवन और आदर्शों का वर्णन किया हैं ।

संस्कृत भाषा में रचित इस महाकाव्य से हम सभी परिचित हैं । अयोध्या नगर में श्री रामचन्द्र का बाल्यकाल, सीता से उनका विवाह, अपने पिता के वचन को निभाने के लिए अपनी पत्नी और भ्राता लक्ष्मण सहित चौदह वर्ष के लिए वनवास, उनके भाई भरत का बलिदान, लंकापति राक्षसराज रावण द्वारा सीता का अपहरण, वानर राजा सुग्रीव और हनुमान के साथ श्री राम से मिलना और मित्रता करना, उनकी मदद से सीता को बचाने की योजना बनाना, भारतीय दक्षिण क्षेत्र से लंका (आधुनिक श्रीलंका) तक एक सेतु (रामसेतु) का निर्माण करना, रावण के भाई विभीषण की सहायता से दुष्ट रावण का वध और धर्मात्मा विभीषण का राज्याभिषेक, श्री रामचंद्र की अयोध्या नगरी में वापसी और राज्याभिषेक, ऋषि वाल्मिकी के आश्रम में सीता का वन्य जीवन और लव-कुश का जन्म, लव और कुश की वीरता, सीता की अयोध्या वापसी, अंत में सीता का पाताल में प्रवेश और श्री राम का जीवन त्याग - ऐसे घटनापूर्ण श्री राम के जीवन का सम्पूर्ण विवरण इस महाकाव्य "रामायण" में वर्णित है ।

एक तरफ इस महाकाव्य में हम माता-पिता, सभी परिजनों तथा जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों की प्रति मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की प्रेम और स्नेह देखते हैं । साथ में उनका आत्मविश्वास, बहादुरी और सभी कठिन परिस्थितियों में धर्मत्यागी ना होने का आदर्श हमारा मार्गदर्शन करता हैं । इसी प्रकार, दूसरी ओर, उनके भाइयों, सभी प्रजाजनों, उनके निकट आने वाले व उनकी महानता को जानने वाले सभी लोगों की, श्री राम के प्रति भक्ति, हर कदम पर हमारा ध्यान आकर्षित करती है। एक आदर्श व्यक्तित्व अपने परिवार के साथ साथ समाज की सभी स्तरों के लोगों की प्रति कितना जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ हो सकता है, इसका आदर्श उदाहरण श्री रामचन्द्र और रामायण में वर्णित कई पात्र (सीता, भरत, लक्ष्मण, सुग्रीव, हनुमान, विभीषण आदि) हैं । ऐसे आदर्श चरित्र की विचारधारा के प्रति समाज की अगाध श्रद्धा और भक्ति इस महाकाव्य में बार-बार उभरकर सामने आते है।

हालाँकि, आधुनिक समय में आज का अधिकांश विज्ञान-विचारशील समाज, किसी भी चमत्कारी गतिविधि को आसानी से स्वीकार नहीं करता है | इतिहास में वर्णित कोई भी घटना, जो आज भी आसानी से संभव नहीं है, ऐसी घटना को हम अंधविश्वास या अंधविश्वासी मन की भावना कहते हैं | भूल जाते है की विज्ञान आज जो भी अविस्कार समाज को दिया है वो भी एक दिन सम्पूर्ण असंभब भावना था। प्राचीन भारतीय कला के जो अद्भुत नमूने आज हमारे सामने आये हैं, उन्हें हम आज भी बना या कल्पना नहीं कर सकते | फिर भी, एक महान "हिन्दू धर्मग्रंथ" होने की वजह से प्रचुर साक्ष्यों और प्रमाण के बावजूद भी "रामायण" आज भी हमारे मन में एक काहानी मात्र है, कोई ऐतिहासिक घटना नहीं। और इसीलिए, श्री राम की जीवन गाथा हमें रोमांचित तो करता है, प्रेरणा नहीं देता | हम अगली पीढ़ी को श्री रामचंद्र के जीवन की कहानी बताना तो पसंद करते हैं, लेकिन उनके विचारधारा से जीना नहीं सिखाते | आज भी "रामायण" को एक काल्पनिक गाथा और "श्री रामचन्द्र" को अंधविश्वास की मूर्ति के रूप में पूजा जाता है, लेकिन भारतीय इतिहास के महानतम व्यक्तित्व के रूप में चरित्र निर्माण में उपयोगी नहीं करवाया जाते हैं | उनकी आत्मा मूर्ति में स्थापित (प्राणप्रतिष्ठा) करवाया जाते है, लेकिन मनुष्य में नहीं। मूर्तियों में श्री राम को ढूंढते है पर मनुष्य में उनकी विचारधारा, उनकी ममता नही ढूंढते है।

इसके इलावा राजनीतिक परिप्रेक्ष्य का जिक्र किए बिना यह लेख पूरा नहीं हो सकता। आज चाहे रामायण तथा श्री रामचंद्र, आदर्श चरित्र, वीरता, बलिदान, समाज के प्रति जागरूक या मार्गदर्शक हो या ना हों, वे हमारे धार्मिक प्रतीक बन गये हैं | हिंदुत्व का एक महान राजनीतिक प्रतीक, जिसकी विजय ध्वनि हर हिंदुत्ववादी को एकजुट होने के लिए प्रेरित करती है। चाहे उनकी महत्व के बारेमे, उनकी मर्यादा पुरुषोत्तम होने की बारेमे ना बोला जाए, आपको "जय श्री राम" बोलना ही चाहिए | "जय श्री राम" नामक जिस ध्वनि हम सभी भारतीयों के आदर्श और विश्वास की आवाज बननी चाहिए, वही आज राजनीति का ज्वलंत नारा बन गए। यह देखकर भी दुख होता है की कुछ सुविधालोभी लोग ऐसे नारे लगाकर और कुछ इसका विरोध करके अपना-अपना लाभ उठाना चाहते है | परम दयालु श्री राम की जन्मभूमि भारतवर्ष में जन्म लेने पर भी हम दया करना ही भूल गए। "श्री राम" नही "जय श्री राम" ही याद रह गए।

अंत में, जिस तीन शब्दों, एक समय वीर हनुमान और समस्त वानर सेना को दुष्ट राक्षसों के श्राप से समाज को मुक्त करने का जो आत्मविश्वास दिलाया था, मैं प्रार्थना करता हूं कि वही आत्मविश्वास नए भारतवर्ष में नई पीढ़ी को भी मिले जिसके सहारे वे आज के समाज का सभी अन्यायपूर्ण उत्पीड़न को मिटा सकें और अतीत के "रामराज" को वापस ला सकें । एक सौ चालीस करोड़ दिल से बार-बार दोहराए जाएं - "आदर्शों और आत्मविश्वास" के दिव्य ध्वनि **"जय श्री राम", "जय श्री राम","जय श्री राम"** ।

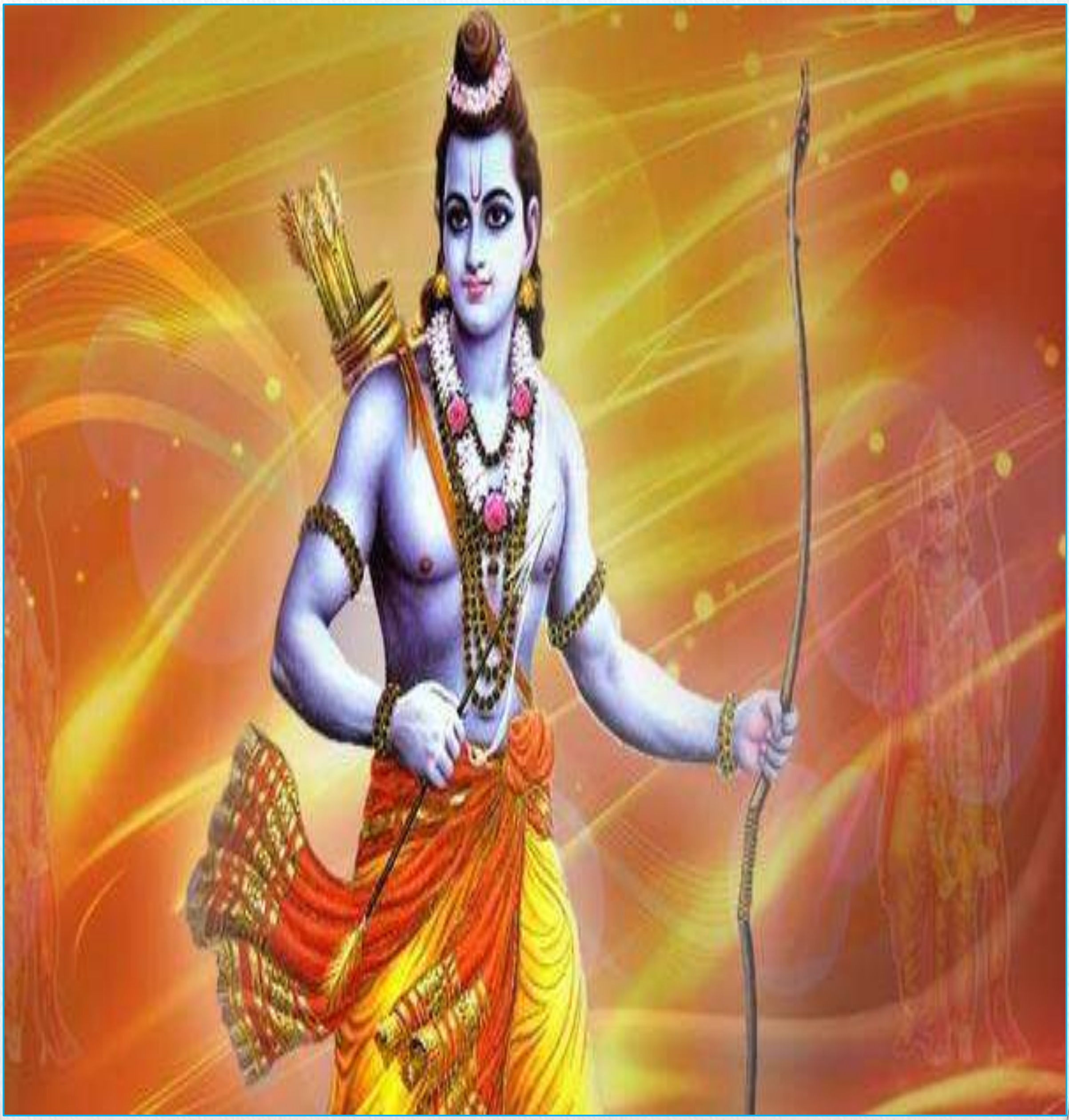

सच्चा धर्म

भीमसेन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक
वित्त एवं लेखा शाखा

धर्म हमारी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है जो छोटे-बड़े, अमीर-गरीब और स्त्री-पुरूष का विभेद किए बिना इंसान के दुःख, दर्द और पीड़ा के तपिश को अपनी शीतल छाँव से सराबोर कर मन को असीम शांति, संतुष्टि और सुकून का एहसास कराती है। परंतु कुछ मुट्ठी भर लोगों द्वारा धर्म को मात्र मजहब एवं संप्रदाय के रूप में स्वीकार कर ईश्वर के नाम पे अपनी दुकान चलाना आज का हीं नहीं बल्कि सभ्यता के आरंभ से ही प्रचलन में रहा है।

महर्षि मनु ने धर्म की सच्ची व्याख्या अपनी सुप्रसिद्ध ग्रंथ मनुस्मृति में इस प्रकार की है-

“धृति क्षमा दमोअस्तेयम शौचं इंद्रियनिग्रह
धीः विद्या सत्यम अक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।”

अर्थात् धैर्य, क्षमा, मानसिक संयम, चोरी न करना, स्वच्छता, इंद्रियों को वश में रखना, विवेकशीलता, विद्या, सत्य एवं क्रोध रहित होना धर्म के दस लक्षण हैं।

अतः सिर्फ ईश्वर की आराधना करना एवं सुबह से लेकर शाम तक पूजा पाठ से संबंधित कर्मकांडों में लिप्त रहना या चौबीसो घंटे माला फेरते रहना ही सच्चे धार्मिक की पहचान नहीं हो सकती बल्कि इसके लिए हमारे व्यवहार एवं चरित्र में उपर उल्लिखित दस लक्षणों का समावेशन जरुरी है।

गीता में धर्म को **“धरति धारयति वालोकम् इति धर्म”** के रुप में व्याख्यायित किया गया है। अर्थात् जो लोकजीवन को धारण करती है वही धर्म है, यानि कि जिन नैतिक नियमों एवं कायदों से एक सुसभ्य समाज के ताने बाने की समरसता बरकरार रहती है वही धर्म है।

संतकवि श्री तुलसीदासजी ने अपनी श्रेष्ठतम कृति श्रीरामचरितमानस में धर्म को पारिभाषित करते हुए लिखा है-

“परहित सरिस धरम नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई।”

अर्थात् परोपकार यानि बिना किसी स्वार्थ के दूसरों का हित करना ही धर्म है।

अगर इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम जिस संस्थान में कार्यरत हैं वह बीमार, लाचार, मजबूर एवं असहाय बीमाधारकों को सामाजिक सुरक्षा के तहत कई तरह के हितलाभ देने वाली संस्था है। यह उन्हे ‘चिंता से मुक्ति’ की गारंटी देता है। अतः हम सबको इस संस्था के सदस्य होने के नाते एक धार्मिक अनुष्ठान के सफल आयोजक का दंभ भरने में कोई गुरेज नहीं होनी चाहिए।

धर्म का आधार सदियों से जिस मजबूत नींव पे टिका है और अनंत काल तक यूँही बरबस जारी रहेगी उन रूमानियत परिकल्पणाओं में ‘***जन्नत***’ सर्वप्रमुख है। तथाकथित धर्म के ठेकेदारों द्वारा लोगों को गुमराह करने के लिए दी जाने वाली इस लोकलुभावक जन्नत प्राप्ति पे व्यंग्य करते हुए मशहूर शायर गालिब़ ने कहा है-

“हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल को खुश रखने को ग़ालिब ये ख्याल अच्छा है।“

हम इतने धनी वैचारिकी वाले देश के निवासी हैं जहाँ धर्म की इतनी संकीर्ण व्याख्य़ा बेमानी मानी जायेगी। यहाँ धर्म को कई आयामों में प्रचारित किया गया है। इन्ही में से एक **स्वकर्तव्यपालन** भी है। अर्थात् हम भारतीय अपने कर्म को भी धर्म मानकर करते हैं। हमारी इस सुसभ्य सांस्कृतिक व्यवस्था में राजधर्म, राष्ट्रधर्म, मित्रधर्म, पितृधर्म, एवं पुत्रधर्म जैसे कई धर्मों की भरमार है । इस संदर्भ में हमारा साहित्य प्रेरक गाथाओं से लबालब है जिसमें पालक की अपने कर्तव्य के प्रति इतनी चरम प्रतिबद्धता होती है कि वे इसके लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने से भी नहीं हिचकते। हमने बचपन से हीं कर्ण का मित्रधर्म, श्रवण कुमार का पुत्रधर्म और राम के राजधर्म का अनुठा मिशाल सुनता आया हूँ।

धर्म का एक अन्य रूप में **'स्वभाव'** से भी जोड़ा जाता है। जैसे कि आग का धर्म है जलाना, पानी का धर्म है बुझाना और इंसान का धर्म है सत्य के मार्ग पे चलते हुए इंसानियत के काम आना। इससे संबंधित साधू एवं बिच्छू की कहानी अत्यंत प्रेरणादायक है- जिसमें एक साधू अपने शिष्य के साथ नदी में स्नान करते वक्त डूबते हुए बिच्छू को बचाने का प्रयास करता है और बिच्छू साधू को हर बार अपने डँक से तेज प्रहार करता है तब समीप खड़े शिष्य के द्वारा बिच्छू को बचाने से मना करने के सलाह पर महात्मन मुस्कुराते हुए कहते हैं कि जब बिच्छू अपने डंक मारने के स्वभाव पर अडिग है तो भला मैं इसे बचाने का अपना स्वभाव अर्थात् अपना धर्म कैसे त्याग सकता हूँ और अततः वे इसे पानी में डूबने से बचाकर सच्चे धर्म की लाज रख लेते हैं।

धर्म वह नैतिक बल है जो व्यक्ति तथा राष्ट्र को शक्ति प्रदान करता है।

स्वामी विवेकानंद

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों का भविष्य

मणिशंकर पाणि
प्रवर श्रेणी लिपिक
रोकड़ शाखा

परिचय:

फोकस टू मूव द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, 4.4 मिलियन हल्के वाहनों की बिक्री के साथ भारत चौथा सबसे बड़ा कार बाजार है। हालाँकि, पेरिस समझौते के तहत निर्धारित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, ऑटोमोबाइल ग्राहकों की बढ़ती संख्या का मतलब पारंपरिक ईंधन की खपत में वृद्धि नहीं होनी चाहिए। **2070** तक भारत के शुद्ध शून्य उत्सर्जन (Net Zero Emission) को प्राप्त करने की दिशा में सकारात्मक विकास दर सुनिश्चित करने के लिए, भारत में एक परिवहन क्रांति की आवश्यकता है जिससे बेहतर "चलने योग्यता", सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा मिलेगा; रेलवे, सड़कें और बेहतर कारें। इनमें से कई "बेहतर कारें" इलेक्ट्रिक होने की संभावना है। हाल ही में, ऑटोमोटिव पेशेवरों और जनता के बीच इस बात पर आम सहमति बढ़ रही है कि वाहनों का भविष्य इलेक्ट्रिक है। हालाँकि, इस संबंध में, भारत को अभी भी बैटरी निर्माण, चार्जिंग बुनियादी ढांचे की स्थापना आदि के मामले में बहुत कुछ करना बाकी है।

भारत में ईवी का वर्तमान परिदृश्य:

शुरुआती चरण में होने के बावजूद, भारत में ईवी बाजार में हाल के वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ हाइब्रिड एंड इलेक्ट्रिक व्हीकल्स (FAME) योजना जैसी सरकारी पहल ने ईवी अपनाने को प्रोत्साहित किया है। प्रमुख वाहन निर्माता और स्टार्टअप बाजार में प्रवेश कर चुके हैं, जो दोपहिया वाहनों से लेकर बसों तक इलेक्ट्रिक वाहनों की एक श्रृंखला पेश कर रहे हैं। चार्जिंग बुनियादी ढांचे में सुधार के बावजूद, इसे व्यापक रूप से अपनाने में बाधा बनी हुई है।

ईवी अपनाने को बढ़ावा देने वाली नीतिगत पहल:

2030 तक 30% इलेक्ट्रिक वाहन समावेश का भारत सरकार के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को हासिल करने के लिए सरकार ने नीतियों मे कुछ बदलाव किए है। सब्सिडी, कर छूट और रियायती वित्तपोषण जैसे प्रोत्साहनों का उद्देश्य ईवी को और अधिक किफायती बनाना है। हाल ही में शुरू की गई नई ईवी नीति में कहा गया है कि सरकार अब 5 साल की अवधि के लिए पूरी तरह से निर्मित (सीबीयू) इलेक्ट्रिक कारों के आयात पर 15% की आयात शुल्क लगेगा। लेकिन कम आयात शुल्क का लाभ केवल उन्हीं कंपनियों को मिलेगा जो भारत में विनिर्माण के लिए न्यूनतम 4,150 करोड़ रुपये या 500 मिलियन डॉलर का निवेश करेंगी। कंपनियों को स्थानीयकरण की दर को तीन साल के भीतर 25 प्रतिशत और पांच साल में 50 प्रतिशत तक बढ़ाने जैसी अतिरिक्त शर्तों का भी पालन करना होगा। यह देश को इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसके अलावा, राज्य सरकारें ईवी-अनुकूल नीतियां लागू कर रही हैं, जिसमें रोड टैक्स और पंजीकरण शुल्क से छूट भी शामिल है।

ईवी अपनाने में आने वाली चुनौतियाँ:

पारंपरिक वाहनों की तुलना में ईवी की उच्च अग्रिम लागत कई उपभोक्ताओं के लिए बाधा बनी हुई है। सीमित चार्जिंग की सुविधा, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, लंबी दूरी की यात्रा न कर पाने की अक्षमता व्यापक रूप से अपनाने में बाधा डालता है। बैटरी लाइफ और चार्जिंग स्टेशनों की उपलब्धता के बारे में चिंताओं के कारण उपभोक्ताओं के बीच रेंज की चिंता बनी रहती है। ईवी के निर्माण और रखरखाव के लिए कुशल कार्यबल और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता चुनौतियां खड़ी करती है।

तकनीकी प्रगति और नवाचार:

बैटरी तकनीक तेजी से विकसित हो रही है, जिससे ऊर्जा घनत्व, रेंज में वृद्धि हुई है। ईवी की क्षमता को बढ़ाने के लिए फास्ट-चार्जिंग की सुविधा और हल्के मटीरीअल विकसित करने के लिए कंपनियां अनुसंधान और विकास में निवेश कर रही हैं।

आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ:

इलेक्ट्रिक वाहन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण कटौती का वादा करते हैं, जो भारत के जलवायु परिवर्तन शमन प्रयासों में योगदान करता है। आयातित फ़सील फ्यूल पर निर्भरता कम होने से ऊर्जा सुरक्षा बढ़ती है। ईवी अपनाने से विनिर्माण, चार्जिंग बुनियादी ढांचे की तैनाती और संबंधित उद्योगों में रोजगार सृजन के अवसर पैदा होते हैं।

भविष्य का दृष्टिकोण और अवसर:

भारतीय ईवी बाजार तकनीकी प्रगति, सहायक नीतियों और बढ़ती उपभोक्ता जागरूकता के कारण तेजी से विकास के लिए तैयार है। चुनौतियों पर काबू पाने और ईवी अपनाने में तेजी लाने के लिए सरकार, उद्योग हितधारकों और शिक्षा जगत के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है। बैटरी स्वैपिंग स्टेशन, स्मार्ट ग्रिड और साझा गतिशीलता मॉडल जैसे नवाचार भारत में इलेक्ट्रिक गतिशीलता के भविष्य को आकार देने का वादा करते हैं।

निष्कर्ष:

भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों का भविष्य उज्ज्वल है, जिसमें परिवहन परिदृश्य को बदलने, पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने और आर्थिक विकास को गति देने की क्षमता है। हालाँकि चुनौतियाँ मौजूद हैं, सभी हितधारकों के ठोस प्रयास विद्युत गतिशीलता की पूरी क्षमता को अनलॉक कर सकते हैं, एक स्वच्छ, हरित और अधिक टिकाऊ भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

यात्रा वृतांत

मंत्रमुग्ध डुआर्स

सुकन्या मजुमदार
प्रवर श्रेणी लिपिक
प्रशासन शाखा

जंगल, एक ऐसा क्षेत्र जहां प्रकृति अपने शुद्धतम रूप में फलती-फूलती है| साहसी और प्रकृति प्रेमियों को इसकी गहराई में जाने और इसके रहस्यों को उजागर करने के लिए प्रेरित करती है।

दूर-दूर तक फैले हुए हरे-भरे चाय के बागान, टेढ़ी-मेढ़ी चांदी जैसी पहाड़ी जलधाराओं, ऊँचे साल के जंगलों, क्षितिज पर महान हिमालय पर्वतमाला की नीली रूपरेखा वाली विशाल घास के मैदान और अंतहीन आकाश... **आप डुआर्स में हैं ।**

डुआर्स अपनी समृद्ध जैव विविधता, जंगलों, वन्य जीवन के लिए प्रसिद्ध है। क्षेत्र के सबसे उल्लेखनीय जंगलों में गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान, जलदापारा वन्य जीवन अभयारण्य और बक्सा टाइगर रिजर्व शामिल हैं। पिछले साल नवंबर में हमने डुआर्स की पारिवारिक यात्रा की थी। हमने सियालदह से उत्तरी पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में 'न्यू माल' जंक्शन तक कंचन कन्या एक्सप्रेस ली। न्यू जलपाईगुड़ी (एनजेपी) स्टेशन को पार करने के बाद - जो दार्जिलिंग के साथ-साथ सिक्किम का प्रवेश द्वार है - न्यू माल जंक्शन तक कुछ घंटों की यात्रा एक सुंदर हरा-भरा इलाका है।

न्यू माल जंक्शन पर एक कार हमारा इंतजार कर रही थी जो हमें गोरूमारा नेशनल पार्क के प्रवेश द्वार लाटागुरी तक ले गई। ट्रेन सुबह 9 बजे के आसपास न्यू माल पहुंच गई थी, और हम दोपहर के भोजन के समय से पहले लाटागुरी पहुंच गए थे। रिज़ॉर्ट एक लुभावनी पृष्ठभूमि का दावा कर रहा था, और यह प्रसिद्ध गोरुमारा राष्ट्रीय उद्यान से कुछ किलोमीटर दूर था। नाश्ते के बाद हम बहुप्रतीक्षित जंगल सफारी के लिए निकल पड़े। जंगल सफारी के सबसे रोमांचक पहलुओं में से एक है, वन मे प्रतिष्ठित प्रजातियों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना। हमने रास्ते में बहुत से मोर और हिरन भी देखें ।

अगले दिन नाश्ते के बाद, हम मूर्ति नदी, झालोंग-बिंदु और सैमसिंग के पास दर्शनीय स्थलों की यात्रा के लिए रवाना हुए। यह रास्ता सुनताले खोला (या सुनतालेखोला) की ओर जाता था, जो एक सँकरी जलधारा थी जिसके ऊपर एक छोटा सा लटकता हुआ पुल था। पुल के दूसरी ओर पश्चिम बंगाल वन विकास निगम का बंगला है। अगले दिन हम बक्सा टाइगर रिजर्व और जयंती नदी के दर्शन के लिए निकले।

बक्सा टाइगर रिज़र्व पश्चिम बंगाल के पूर्वोत्तर भाग में भूटान की सीमा पर स्थित है। डुआर्स क्षेत्र में इसका सबसे बड़ा वन क्षेत्र है, जिसका क्षेत्रफल 759 वर्ग किमी है। इस जंगल को 1983 में टाइगर रिज़र्व घोषित किया गया था। बक्सा टाइगर रिज़र्व में बाघों की संख्या एक समय सुंदरबन के बाद पश्चिम बंगाल में दूसरी सबसे बड़ी पाई गई थी। बक्सा टाइगर रिजर्व के प्रवेश द्वार पर राजभातखाओआ में एक टिकट काउंटर है जहां से आपको रिजर्व क्षेत्र में प्रवेश के लिए टिकट मिलेंगे। प्रवेश करने के बाद, लगभग 10 किमी की ड्राइव आपको बक्सा मोड़ नामक क्रॉसिंग पर ले जाएगी। दाहिना मोड़ आपको जयंती तक ले जाएगा, जो जयंती नदी के किनारे है। जयंती भी बक्सा टाइगर रिजर्व का एक हिस्सा है और बक्सा मोड़ से लगभग 5 किमी दूर है।बक्सा टाइगर रिजर्व में जंगल सफारी जयंती से ही शुरू होती है। पेड़ों, घास के मैदानों और वन्यजीवों के भाग्यशाली दर्शन के बीच का भयानक सन्नाटा सफारी को काफी आनंददायक बनाता है। बक्सा टाइगर रिजर्व के मामले में, हम केवल झींगुरों की लगातार आवाज ही सुन सकते थे। हमने जंगल के अंदर कुछ हिरण और कुछ पक्षियों को देखा। चुनिया वॉचटावर और भूटिया बस्ती वॉचटावर जयंती गांव के विपरीत दिशा में जयंती नदी के पार स्थित हैं। दोनों वॉच टावर बक्सा टाइगर रिजर्व के जोन में आते हैं। वॉचटावर से, आप कई वन्य जीवन देख सकते हैं। यहां भगवान शिव को समर्पित महान महाकाल गुफा भी है।अगले दिन हमने कूचबिहार यात्रा की योजना बनाई।

कूचबिहार पहुंचने के बाद सबसे पहले हमने मदनमोहन मंदिर के दर्शन किए। इस मंदिर का निर्माण महाराजा नृपेंद्र नारायण ने कराया था। इस मंदिर के मुख्य देवता भगवान कृष्ण हैं, जिन्हें मदनमोहन कहा जाता है। प्रार्थना करने के बाद हमने दूसरी जगह की यात्रा शुरू की और वह है महल। महल में एक संग्रहालय है जो अवश्य देखने योग्य स्थान है। फिर, हम न्यू अलीपुरद्वार स्टेशन पहुंचे और सियालदह के लिए ट्रेन पकड़ी। और यहीं हमारी खूबसूरत यात्रा समाप्त होती है।

जंगल की यात्रा केवल अन्वेषण की यात्रा नहीं है बल्कि एक परिवर्तनकारी अनुभव है जो प्रकृति के साथ गहरे संबंध को बढ़ावा देती है और पर्यावरण के प्रबंधन को बढ़ावा देती है। जैसे ही हम इसके आलिंगन में आगे बढ़ते हैं, आइए हम श्रद्धा और सम्मान के साथ धीरे से आगे बढ़ें, क्योंकि जंगल केवल एक गंतव्य नहीं है बल्कि एक जीवित, सांस लेने वाली इकाई है जो हमारी सुरक्षा और प्रशंसा के योग्य है।

शांति और सुंदरता का अनूठा मिश्रण : पंचमढ़ी

मणि शंकर पाणि
प्रवर श्रेणी लिपिक
रोकड़ शाखा

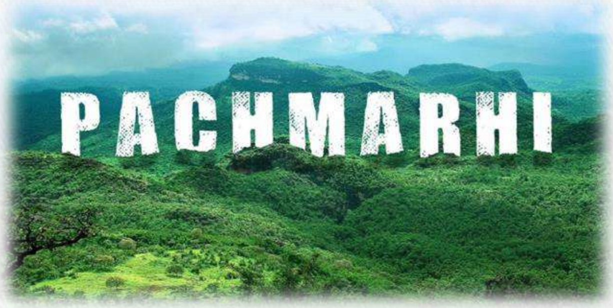

मुझे बचपन से ही जंगल, पहाड़, नदी, झरने आदि देखना, उनका चित्र देखना, जंगली जानवरों का चित्र बनाना आदि बहुत पसंद था। पहाड़ों का चित्र देखने से उनपे चढ़ने का मन करता था। सोचता था, कब इन पहाड़ों पर चढ़ने का मौका मिलेगा? हिन्दी में एक कहावत है – "जहां चाह वहाँ राह!" कोई अपने अंतर्मन से किसी चीज को पाने की कोशिश करता है और उसके लिए अपने दिलों जान से कोशिश करता है तो भगवान जरूर उसका सुन लेते हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। मैं केन्द्रीय विद्यालय के नौवीं कक्ष का छात्र था। केन्द्रीय विद्यालय में स्काउक-गाइड का एक विभाग है। नौवीं कक्षा में स्काउट-गाइड के छात्र-छात्राओं के लिए पर्वतारोहण का एक कोर्स था। उसमे इच्छुक छात्र-छात्राओं को उनके अभिवाकों के अनुमति के अनुसार इस कोर्स मे शामिल किया जाता था। इस कोर्स का नाम सुनते ही मैं खुशी से "फूल न समाया"।

तीस बच्चों का एक टीम जाना था साथ मे दो शिक्षक और एक शिक्षिका। पर्वतारोहण का स्थान था- "पंचमढ़ी", जो मध्यप्रदेश मे स्थित है। मैंने अपनी माँ से पंचमढ़ी के मनोरम दृश्य के बारे मे सुना था क्योंकि मेरी माँ भी उसी स्कूल की शिक्षिका थीं और पंचमढ़ी से ही स्काउट-गाइड का प्रशिक्षण प्राप्त की थीं। उसी समय से मैं पंचमढ़ी की सैर करने के लिए व्याकुल था।

स्कूल से घर आते ही मैंने सारी बात अपनी माँ को बताई। माँ ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "वहाँ जाना तुम्हारे बस की बात नहीं है। वहाँ एक दिन बिताना तुम्हारे लिए मुश्किल है, रही 15 दिनों की बात। तुमसे बिल्कुल नहीं होगा। वहाँ रात में तंबू में सोना पड़ता है, रात मे तरह – तरह के सांप और बीछू सैर करने निकलते हैं।" यह सुनकर मैंने खूब रोना-धोना शुरू कर दिया और अंत में मैं विजयी हुआ। मुझे 15 दिनों के लिए पर्वतारोहण की अनुमति मिल गई। मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था। ऐसा लग रहा था मानो किसी ने आसमान से तारे तोड़कर मेरे हाथ में रख दिए हों।

मई का महिना था। भीषण गर्मी, चारों तरफ लू चल रही थी। सुना था, पंचमढ़ी हिल स्टेशन है, जरूर ठंडा होगा। मन में खुशी और उमंग भरी हुई थी। खुशी ज्यादा इसलिए थी क्योंकि पहली बार माता पिता को छोड़कर दोस्तों के साथ बाहर जा रहा हूँ। 15 दिन मस्ती करने को मिलेगा। दिन-रात दोस्तों के साथ, बाहर खाने को मिलेगा, पहाड़ों पर चढ़ने को मिलेगा आदि।

15 मई से कोर्स शुरू होने वाला था। हमें दो दिन पहले अर्थात 13 मई शाम को घर छोड़ना था। 12 मई को हमारे शिक्षक महोदय ने बताया की एक कोच मे टिकट कनफर्म नहीं हुआ है। 30 बच्चों को 3 अलग कोच में मिला है। यह सुनकर खुशी के ज्वार मे कुछ भाटा पड़ गया। कुछ देर के लिए उदासी छा गई। यह देखकर शिक्षक महोदय ने कहा। "अरे! उदास क्यों होते हो? चलो न, रास्ते में एडजस्ट कर लेंगे।" यह सुनकर फिर से खुशी छा गई।

13 मई शाम को हम आसनसोल स्टेशन पहुंचे। वहीं बाम्बे मेल पकड़ना था। हमारे शिक्षक हमेशा हिदायत देते रहे कि अपने-अपने सामान का ध्यान रखना। ट्रेन अपने निर्धारित समय पर स्टेशन पहुंची और हम सब भगवान का नाम लेके ट्रेन पर चढ़ गए। सभी के माता-पिता स्टेशन पहुंचे हुए थे। ट्रेन मे चढ़ते समय सभी के आखें नम हो गई। कुछ देर के लिए हम सब उदास हो गए क्योंकि पहली बार हम सब अपने माता-पिता से अलग हो रहे थे। ट्रेन चल पड़ी। कुछ देर बाद सब ठीक हो गया।

अब फिर वही उत्सुकता- कैसी जगह होगी, कैसा पहाड़ होगा, कौन-कौन से जंगली जानवर देखने को मिलेंगे आदि। कुछ देर तक खूब हल्ला हुआ फिर सब अपने घर से लाए हुए टिफ़िन बॉक्स खोलकर खाने लगे। हमारे शिक्षक भी हमारे साथ डिनर कर रहे थे। आश्चर्य की बात यह थी कि जो शिक्षक क्लास मे इतने कड़े स्वभाव के लगते थे, वो एकदम अलग लग रहे थे। वे भी हमारे साथ ज़ोर-ज़ोर से हंसते, गाने बजाते हुए मस्ती कर रहे थे। वे बोले की "डरो मत! कुछ दिन हमें अपना दोस्त समझो।" वाह! और क्या चाहिए। रात को हम सब अपनी सीट पर जा कर सो गए। दूसरा दिन भी इसी तरह बीत गया। दूसरे दिन ही हम सब अपने गंतव्य स्टेशन पिपरिया रेल्वे स्टेशन पहुंचे। रात हो चुकी थी इसलिए होटल बुक करना पड़ा। हम सब काफी थके हुए थे इसलिए कपड़े बदल कर तुरंत सो गए।

अगले दिन सुबह-सुबह, नहा-धो कर नाश्ता करके हम सब बस स्टैन्ड पहुंचे। बस में सीट मिल गई क्योंकि वहाँ यात्रियों को खड़ा नहीं रखा जाता। मजे की बात यह थी की ऐसी घुमावदार सड़क मैंने पहले कभी नहीं देखी थी। बस घूम-घूम कर पहाड़ पर चढ़ रही थी। रास्ते के एक तरफ पहाड़ तो दूसरी तरफ गहरी खाई थी। हम सभी डरे सहमे हुए थे। नजरा काफी सुंदर था। ऐसा लग रहा था मानो किसी चित्रकार ने बहुत हीं ध्यान पूर्वक पहाड़ों का चित्रण किया है। पहाड़ियों के बीच बहुत सारे झरनें अपनी मंथर गति से अपनी गंतव्य की ओर अग्रसर थे। पंचमढ़ी के पहाड़ों पर ही सेना का प्रशिक्षण स्थल है। जगह जगह प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है। यह देखकर बहुत अच्छा लगा।

लगभग दो घंटे की बस यात्रा के बाद हम सब अपने प्रशिक्षण केंद्र पहुंचे। वहाँ पहुंचते ही हम सब का मुंह सुख गया। वहाँ बहुत सारे तंबू लगाए हुए थे। हमारे शिक्षक ने कहा कि हमें इन तंबुओं मे सोना पड़ेगा। पहली रात बहुत कष्ट से गुजरी। तंबू मे सोना बहुत अजीब लग रहा था। वहाँ देश के हर कोने से केन्द्रीय विद्यालय के छात्र और शिक्षक आए हुए थे। वहाँ सुबह सुबह 6 बजे से शाम 6 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते थे। कैसे पहाड़ों पर चढ़ा जाता है, चढ़ने के लिए कौन से उपकरणों की आवश्यकता होती है। कौन सी औषधियाँ साथ रखनी होती है, ये सारी चीजें बताई गई। वहाँ के मनोरम दृश्य को लिपिबद्ध करना तो मुमकिन नहीं है पर इतना बताना चाहूँगा कि ऐसा लगता था की ये सब प्राकृतिक नहीं है। किसी ने फुरसत से इन्हे संजाया है। जगह जगह झरने केपानी मे आम-जामुन पड़े हुए थे। एक-दो बार हमने उन्हे उठाकर खाया भी। वो इतने मीठे थे जैसे मिस्री के दाने। इतने तरह के पक्षियों को मैंने पहली बार देखा था। सुंदर-सुंदर फूल, लताओं को मैं निहारता रहता और सीटी की आवाज से आगे बढ़ना पड़ता।

इस तरह धरती मां के सुंदर रूप को निहारते हुए 15 दिन कैसे बीत गए पता ही नहीं चला। अंतिम दिन सभी का मन दुखी था। सब दोस्तों से घुल-मिल जाना और अब सबसे बिछड़ना काफी कष्टदायक लग रहा था। आने से एक दिन जाना ही पड़ता है। हम सब अपना-अपना सामान बांधकर पुनः उन्ही घुमावदार सड़कों से होते हुए स्टेशन पहुंचे। ट्रेन आते ही हम सब उस पर चढ़ गए। इस बार सबका सीट एक ही कोच मे था। हम सब थके हुए थे इसलिए तुरंत सो गए। अगले दिन शाम को ट्रेन आसनसोल स्टेशन पहुंची। सभी के माता-पिता स्टेशन आए हुए थे। उनको देखकर सबका दिल खिल उठा क्योंकि लगभग 20 दिनों तक उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा आखों को नसीब नहीं हुआ था। मेरी माँ ने मुझे प्यार से गले लगा लिया।

वो मेरे सुनहरे सपने हकीकत मे बदल गए जिन्हे में कभी भूल नहीं पाऊँगा। महाराज पांडु के पाँच पुत्र थे जिन्हे पांडव कहा जाता है, वे अपने लिए पाँच कुटीर बनाए थे। हमने उनके भी दर्शन किए। जैसे पांडव अमर है ठीक उसे तरह पंचमढ़ी की यात्रा मेरे लिए सदैव अमर रहेगा ।

यात्रा वृतांत – लाहौल-स्पीति

प्रियम दास
कक्षा - सप्तम
पुत्र - प्रसेनजीत दास
सहायक
वित्त एवं शाखा

यात्रा करने से अत्यधिक आनंद मिलता है। अब यह हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। वर्ष 2023 में हमने हिमाचल प्रदेश में स्पीति घाटी का दौरा किया। यह हमारा बहुत पुराना सपना था। चार बच्चों को मिलाकर, हम संख्या में दस थे। हम फ्लाइट से चंडीगढ़ पहुंचे और वहां से हमारा सफर शुरू हुआ । पहले दिन हम सराहन पहुंचे और रात वहीं रुके। रास्ते में फागु घाटी ने हिमालय श्रृंखला के भव्य दृश्य के साथ हमारा स्वागत किया। रात्रि विश्राम होटल स्नो फ्लेक में था।

अगली सुबह लगभग आठ बजे हम भीमाकाली मंदिर की ओर बढ़े, जो इक्यावन सती- पीठों में से एक के रूप में प्रतिष्ठित है । सराहन से निकलने के बाद हम रकछम के लिए आगे बढ़े । रकछम से आगे की यात्रा घाटी के आकर्षणों के बीच आनंददायक और साहसिक थी। हम सूर्यास्त से पहले पहुँच गए, इसलिए हमने नदी के किनारे कुछ तस्वीरें खींचने की योजना बनाई। रात्रि विश्राम 'द लेजेंडरी रुपिन रिवर व्यू' में था जो काफी आरामदायक जगह थी।

एक अच्छी रात के आराम के बाद हम सुबह सुबह उठे और ताजा बर्फ से ढके पहाड़ों को देखकर हमारा मन तृप्त हो गया। सुबह बसपा नदी के आसपास टहलने के बाद, हमने नाश्ता किया और छितकुल की ओर चल दिए, जो लगभग 11,000 फीट की ऊंचाई पर स्थित रकछम से लगभग 12 किमी दूर था। छितकुल इस सर्किट का अंतिम रहने योग्य भारतीय गाँव है। यह एक छोटा सा सुरम्य गांव है जहां बसपा नदी ने खुद को और भी खूबसूरत बना लिया है। हम उसी दिन वापस रकछम लौट आए और गांव में घूमने का फैसला किया जो आंखों को काफी सुकून देने वाला था। जैसे ही सूरज ढल गया, हमने होटल की ओर वापसी की।

अगली सुबह हम उन रास्तों से लौटने के लिए जल्दी निकले, जिनसे होकर हम आए थे। रास्ते में, हमें कामरू किले की झलक मिली और हमने करछम बांध पर बसपा नदी को अलविदा कहा और तब से शताद्रु नदी के साथ बने रहे । लगभग डेढ़ घंटे के बाद, हम रिकांगपिओ पहुँचे , जो किन्नौर जिले का एक बड़ा शहर है, जहाँ सर्दियों पुरानी कपड़ों का प्रसिद्ध बाज़ार है। अपने होटल में प्रवेश करने से पहले, हमने रागी गाँव और द सुसाइड पॉइंट और उसके आसपास सेब के बगीचों को देखा। रात्रि विश्राम होटल व्हाइट नेस्ट में था जो एक उपयुक्त स्थान था।

अगले दिन जागने के बाद, हमें किन्नौर-कैलाश शिखर की स्पष्ट झलक मिली। हम अपनी तरफ शतद्रु नदी के साथ-साथ जा रहे थे । खाब में स्पीति और शतद्रु नदियों के दिव्य संगम पर, हमने शतद्रु नदी को अलविदा कहा और नाको की ओर स्पीति नदी से शुरुआत की, जो लगभग 12,000 फीट की ऊंचाई पर थी। प्रकृति ने अपना रूप बदलना शुरू कर दिया। एक ऊबड़-खाबड़ इलाके ने अपनी बंजर सुंदरता से हमारा स्वागत किया। दोपहर करीब डेढ़ बजे हम नाको पहुँचे। छोटे कदमों से हम नाको गांव से गुजरे और नाको मठ और नाको झील का दौरा किया। थोड़े समय के दोपहर के भोजन के बाद, हम ताबो के पास गिउ मठ की ओर चल पड़े जहाँ पाँच सौ साल पुरानी एक ममी संरक्षित रखी गई है। लगभग शाम हो चुकी थी और इसलिए हम ताबो की ओर अपने होटल, द स्पीति विला की ओर चल पड़े।

अगली सुबह हमने ताबो मठ का दौरा किया और फिर काजा की ओर चल पड़े । जैसे-जैसे हम आगे बढ़ रहे थे प्रकृति भी अपना रूप बदल रही थी। प्रकृति के प्राकृतिक शुष्क और बंजर दृश्यों ने हमें लद्दाख की याद दिला दी । प्रत्येक मोड़ में कुछ नया था। दोपहर तक हम धनखड़ मठ पहुँच गये। मठ 1,200 साल पुराना था और स्पीति घाटी के ऊपर एक क्षत- विक्षत चट्टान से मजबूती से चिपका हुआ था। हम शाम को काज़ा में अपने होटल डेलेक हाउस प्रीमियम पहुंचे।

उस दिन हमने काजा से शुरुआत की । स्पीति नदी अपने आड़े- तिरछे रास्तों पर हमारा साथ दे रही थी। एक समय में, हमने नीचे नदी छोड़ दी और 14,500 फीट की ऊंचाई पर लंग्ज़ा गांव तक पहुंचने के लिए पहाड़ की चोटी पर चढ़ना शुरू कर दिया। वहां भगवान बुद्ध की एक बड़ी मूर्ति रखी गई थी। कुछ देर बेहद ठंडी हवाओं में रहने और कुछ फोटो सेशन के बाद हम 15,027 फीट की ऊंचाई पर स्थित कोमिक गांव की ओर बढ़े । कॉमिक विलेज मोटर योग्य सड़क से जुड़ा दुनिया का सबसे ऊंचा गांव है और इसमें दुनिया का सबसे ऊंचा रेस्तरां है । यह स्थान एक मठ से भी घिरा हुआ है। वहां से, हम 14,400 फीट की ऊंचाई पर स्थित हिक्किम गांव जाने के लिए अपनी कार पर चढ़े, जो दुनिया के सबसे ऊंचे डाकघर को घेरता है। उसके बाद, हमने चिचम ब्रिज का दौरा किया जो दुनिया का दूसरा सबसे ऊंचा हैंगिंग ब्रिज है। फिर, किब्बर गांव से होते हुए हम की मठ पहुंचे, एक बड़ी गुफा जिसमें कुछ धार्मिक संरचनाएं थीं। जैसे ही सूरज डूबा, मौसम काफी ठंडा हो गया था और इसलिए, हमने काजा में अपने होटल की ओर वापस यात्रा शुरू कर दी ।

पिछली रात से आसमान बादलों से घिरा हुआ था और अनुमान था कि अगले दिन बारिश या बर्फ़बारी हो सकती है। पूरी रात बर्फबारी होती रही और सुबह जब हम चंद्रताल के लिए निकले तो हमने देखा कि बंजर पहाड़ियों की चोटियाँ बर्फ से सफेद हो गई थीं। हमने किब्बर गांव से होते हुए पिछले दिन की सड़क पकड़ी, और जैसे ही हम चिचम ब्रिज पर पहुंचे, बर्फ के टुकड़े गिरने लगे और हमारे ड्राइवर के अनुसार, हमारे चंद्रताल जाने और बाकी लोगों के न जाने की पचास प्रतिशत संभावना थी । ड्राइवर की सोच तब सही निकली जब मैसेंजर की तरह एक कॉल आई। व्यक्ति ने कहा कि चंद्रताल से लगभग 9 किमी दूर कुंजुम दर्रे पर 5 सेमी बर्फ जमने के कारण लोसर स्थान से बीआरओ द्वारा सड़कें अवरुद्ध कर दी गईं। यह खबर सुनकर हमें निराशा हुई । चंद्रताल झील और अटल टनल देखने का हमारा सपना अधूरा रह गया। भारी मन से बारह घंटे से अधिक की यात्रा के बाद हम कल्पा पहुंचे । हम द व्हाइट नेस्ट में रुके।

दस घंटे से अधिक की यात्रा के बाद कल्पा से शिमला आये । दो दिन की लम्बी यात्रा में हमें अत्यधिक थकान महसूस हुई। तो, उस दिन हम होटल पहुंचे और स्वादिष्ट रात्रिभोज के बाद जल्दी सो गए।

अगले दिन, हमने सुरक्षित और अच्छी तरह से घर पहुंचने के लिए चंडीगढ़ हवाई अड्डे से कोलकाता हवाई अड्डे तक अपनी उड़ान पकड़ने के लिए शिमला से देर से शुरुआत की। हमारी यात्रा यहीं समाप्त हुआ और हम ढेर सारी सुखद यादें लेकर वापस चले आये। धन्यवाद ....

वाराणसी का अनावरण: पवित्र शहर के दृश्य

सौकार्य सांफुई
प्रवर श्रेणी लिपिक
प्रशासन शाखा

मेरी वाराणसी की यात्रा फरवरी माह में हुई। इसे 9 फरवरी को लगभग 8:30 बजे दून एक्सप्रेस के माध्यम से शुरू किया गया था और हिंदू धर्म के पवित्र शहर तक पहुंचने में लगभग 14 घंटे लगे। वाराणसी की स्थानीय संकरी गलियों और स्थानीय मंदिरों को देखते हुए शहर की खोज शुरू हुई।

जैसे ही शाम ढलती है, दशाश्वमेध घाट मंत्रमुग्ध कर देने वाली गंगा आरती, भक्ति और आध्यात्मिकता के नजारे से जीवंत हो उठता है। पूरे वर्ष, आरती शाम 6 बजे शुरू होती है और लगभग 45 मिनट तक चलती है। यह समारोह लोगों के लिए बेहद खास है. यह गंगा नदी के प्रति सम्मान और धन्यवाद दर्शाता है। यह आशीर्वाद और शांति जैसी अच्छी चीजें मांगने का भी समय है।

समारोह में होना एक विशेष स्थान पर होने जैसा है। आप धूप की गंध और घंटियाँ सुन सकते हैं। यह शांतिपूर्ण महसूस कराता है और लोगों को किसी बड़ी चीज़ से जुड़ा हुआ महसूस कराता है। चाहे आप आस्तिक हों या जिज्ञासु यात्री, गंगा आरती वाराणसी की आत्मा की एक झलक प्रदान करती है, जो आपको पवित्र जल द्वारा इस प्राचीन शहर के जादू और रहस्य का अनुभव करने के लिए आमंत्रित करती है।

गंगा आरती समाप्त होने के बाद, कोई भी वहां कुछ और घंटों तक रुक सकता है, तस्वीरें ले सकता है, स्थानीय लोगों के साथ बातचीत कर सकता है, कुछ कप चाय पी सकता है और शहर के वास्तविक सार को महसूस कर सकता है। घाटों से गुजरते समय, किसी को कई आनंददायक घटनाएं देखने को मिलती हैं जो किसी के मन को गहराई से छू सकती हैं, जैसे कि कुछ छोटे बच्चे कुछ आगंतुकों द्वारा पेश किए गए गर्म नूडल्स का आनंद ले रहे हैं ।

मंदिर, जैसे - संकट मोचन हनुमान मंदिर, श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मंदिर, श्री अन्नपूर्णा मंदिर, बीएचयू परिसर में श्री काशी विश्वनाथ मंदिर - शहर के प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन की जा सकती है। उसके बाद, कोई अपने दोपहर के भोजन के बाद और घाटों की खोज शुरू कर सकता है।

वाराणसी में घाट नदी के किनारे की सीढ़ियाँ हैं जो गंगा नदी के तट तक जाती हैं। शहर में कुल 84 घाट हैं। अधिकांश घाट स्नान और पूजा अनुष्ठान घाट हैं, जबकि दो घाट - मणिकर्णिका और हरिश्चंद्र - विशेष रूप से दाह संस्कार स्थलों के रूप में उपयोग किए जाते हैं।

जब आप नदी के किनारे चलते हैं, तो आप कई आश्चर्यजनक दीवार कलाएँ देख सकते हैं जो इस जगह के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। इन रंगीन दीवार कलाओं की समृद्धि लोगों की आस्था और भावनाओं को दर्शाती है। ये दिखाते हैं कि कैसे चीजें हमारी समृद्ध संस्कृति की तरह हमेशा के लिए बनी रहती हैं।

घाट की प्राकृतिक सुंदरता को शब्दों में बयां करना वाकई मुश्किल है। इन घाटों का इतिहास, महत्व हर किसी को इनके बारे में और जानने के लिए आकर्षित करता है। तैरती नावें आगंतुकों को उस पर जहाज चलाने और गंगा नदी की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने के लिए आकर्षित करती हैं।

मणिकर्णिका में घाट और हरिश्चंद्र घाट पर दाह संस्कार साल भर दिन-रात किए जाते हैं। वाराणसी में अंतिम संस्कार करना शुभ माना जाता है, और पूरे भारत से कई लोग अपने मृत प्रियजनों के शवों को अंतिम संस्कार के लिए यहां लाते हैं। हिंदू मान्यता के अनुसार वाराणसी में अंतिम संस्कार करने से मोक्ष मिलता है अर्थात् जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिलती है। यह अनुष्ठान वाराणसी में सदियों से एक परंपरा रही है और हिंदू विश्वास और अभ्यास का एक अभिन्न अंग बनी हुई है।

वाराणसी में नेपाली मंदिर एक विशेष स्थान है जो नेपाल और भारत की संस्कृतियों का मिश्रण दर्शाता है। यह मंदिर अलग दिखता है क्योंकि इसकी छत ऊंची है और इसमें सुंदर नक्काशी और पेंटिंग हैं। यह भगवान पशुपतिनाथ को समर्पित है, जो हिंदू भगवान शिव का एक रूप हैं जिनकी नेपाली लोग पूजा करते हैं।

लोग यहां प्रार्थना करने और शांति महसूस करने आते हैं। यह मंदिर हमें नेपाल और भारत के बीच मजबूत बंधन की याद दिलाता है, और यह वाराणसी में लोगों के लिए भगवान से जुड़ने के लिए एक अच्छी जगह है।

आखिरी दिन, सुबह में सारनाथ जाने का विकल्प चुन सकते हैं । वाराणसी के पास स्थित सारनाथ, बौद्ध धर्म के केंद्र में गहरा महत्व रखता है। यहां, दो सहस्राब्दी पहले, बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था, जिससे एक आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत हुई जो दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रेरित करती रही। सारनाथ जाने पर, किसी का स्वागत धमेक स्तूप और अशोक स्तंभ जैसी प्राचीन संरचनाओं से होता है , जिनमें से प्रत्येक में बीते युग की कहानियां हैं और करुणा और ज्ञान की कालातीत शिक्षाओं को प्रतिबिंबित करती हैं। सारनाथ का शांत वातावरण, आत्मनिरीक्षण और ध्यान के अवसर के साथ मिलकर, इसे आंतरिक शांति और आध्यात्मिक विकास के चाहने वालों के लिए एक अभयारण्य बनाता है। जैसे ही पर्यटक इसके शांत बगीचों में घूमते हैं और इसके ऐतिहासिक खजाने का पता लगाते हैं, वे इस पवित्र स्थल में व्याप्त ज्ञान के प्रति श्रद्धा की भावना महसूस करने से खुद को रोक नहीं पाते हैं।

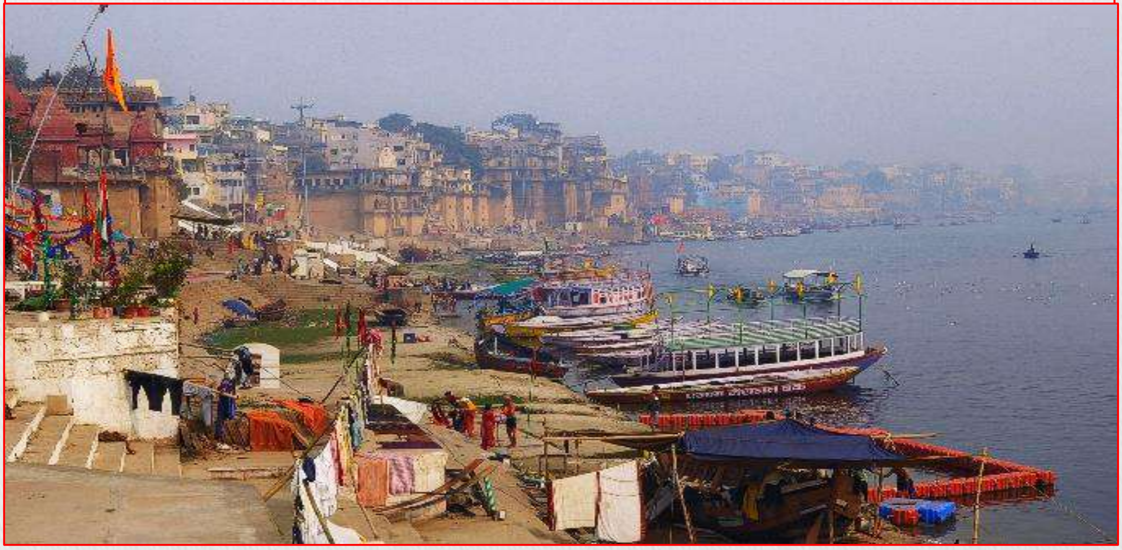

दोपहर के समय शांति का अनुभव करने के लिए आपको रामनगर किले का दौरा करना चाहिए। 250 साल पहले निर्मित, यह वाराणसी के राजाओं का घर था, जिन्हें काशी नरेश के नाम से जाना जाता था । किले की लाल दीवारें और जटिल डिज़ाइन इसकी भव्यता को दर्शाते हैं, और अंदर, एक संग्रहालय पुराने शाही कपड़े, फैंसी कारों और प्राचीन हथियारों को प्रदर्शित करता है। प्रत्येक वर्ष नवरात्रि के दौरान, रामनगर रामलीला में रामायण के दृश्यों का प्रदर्शन करने वाले कलाकारों के साथ किले को जीवंत बना दिया जाता है। रामनगर किले का दौरा करने से शाही वैभव और सांस्कृतिक विरासत के बीते युग की झलक मिलती है।

यात्रा 13 फरवरी को हिमगिरि एक्सप्रेस से वाराणसी स्टेशन पर चढ़कर घर वापसी पर समाप्त होती है । हालाँकि समय यहाँ समाप्त हो सकता है, लेकिन इन तस्वीरों में कैद यादें चमकती रहेंगी, जो उन सभी के लिए वाराणसी के कालातीत सार को रोशन करती रहेंगी जो अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर निकलते हैं ।

(चित्र सौजन्य -

रूपम सरकार,

शाखा कार्यालय सांकराइल)

कविता

रूप तुम्हारा कैसा भी हो ...

रवि कहर
बहुकार्य कार्मिक
राजभाषा शाखा

गुण-रूप-रंग से भरी हुई
हर देव तुम्हीं से हारा है,
हर शय में छाई छवि तुम्हारी
तुमने ही सब को ताड़ा है।
तुमने सब को प्यार दिया विस्तार दिया; ममता के आँचल में पाला!
तुमसे कैसे उऋण हो कोई
सब को दिया सहारा है।।

गुण-रूप-रंग ---
कभी बनी माता बच्चों की
कभी बनी दादी-नानी,
कभी लिया अवतार देवी का
कभी किया खुद को पानी।
रूप तुम्हारा कैसा भी हो; पर लगता बेहद प्यारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

रीति-प्रीती-कलाकृति में
तुमने परचम लहराया,
अज्ञान-जगत में ज्ञान-दीप को
अबतक तुमने पहुंचाया।
अहसान तुम्हारा तिहुँ लोक पर; तन-मन-धन सब वारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

गुण-ही-गुण से भरी हुई तुम
चण्डी मृदुल भवानी हो,
दुनिया का इतिहास बदलती
रोज नई कहानी हो।
बुझा रूप तो निर्मल शबनम; पर जलने पर अंगारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

सूरज में है लाली तुमसे
चन्दा में है नूर,
सब को है बस चाह तुम्हारी
हर कोई मजबूर।
भाल चंद्रमा नयन समंदर ; अधरों पर अमृत धारा है।।
गुण-रूप-रंग ---

तुम्हें ज़रुरत क्या उपमा की

तुमतो स्वयं उदहारण हो,

सृष्टि के हर रूप-रंग का

एक तुम्हीं तो कारण हो।

तुमसे कैसे होड़ लगाएं; जब तुमसे जगत हमारा है।।

गुण-रूप-रंग ---

समय-समय की दवा बनी तुम

समय-समय का रोग,

सब के दिल की एक ही चाहत

हो जाए संयोग।

बचा कौन है रूप-रंग से; स्वयं रचयिता हारा है।।

गुण-रूप-रंग ---

गुण-रूप-रंग ---

सपने ...

प्रियेश कुमार
बहुकार्य कार्मिक
प्रेषण शाखा

फूल से कोमल, प्यारे-प्यारे सपने
प्यार से पले हैं, दुलारे सपने
माघ में बहती बहारें सपने
सावन की रिमझिम-फुहारें सपने

बाट जोहे कि राह निहारें सपने
हमारे सपनें, तुम्हारे सपने...

है कैद में नींद की बेचारे सपने
जमीं पर खुद को कैसे उतारे सपने ?
घूमते थे ज़ेहन में आवारे सपने,
देखते थे सैंकड़ों नजारे सपने

बैठे हैं आज मुंह-उतारे सपने,
कोसते हैं हमें, ये सारे सपने
डूबते हुए हमको पुकारें सपने
बचा लो!, हम हैं अपने ही तुम्हारे सपने
बेचारे सपनें, प्यारे-प्यारे सपने
किस्मत के मारे हमारे सपने ...

मैं.. धोबी का कुत्ता

मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बरसों बाद
जब मैं पहुंचा अपने गांव में
खेत खलिहान में
और
पीपल की छांव में
देखने लगे मुझे सब हैरान-सा
मानो अपने घर में हूं मैं मेहमान-सा

नौकरी की जुस्तजू में
हम तो बेघर हो गए
गांव से हम क्या निकले
हम तो दर-ब-दर हो गए
हम करने लगे कुछ ऐसे नौकरी
पेट तो भरा पर भूख बढ़ने लगी
आज बारह साल हो गए
घर से दूर नौकरी करते-करते
माह के अंत में सैलरी से
खुशियों की किश्तें भरते-भरते

जब दूर शहर के मकान में
नया सामान सजा रहे थें
समझ में नहीं आया
घर से दूर हुए
या नया घर बसा रहे थें
आज पैसे हैं, नौकरी है
शहर में नौकर हूं
रहने को घर है
पर घर से बेघर हूं
घर से दूर होकर
जो अब शहर में बस लिए हैं
पहले भाई-बहन संग-संग रोते थें
हंसते भी हैं अब तो अलग-अलग होते हैं

पहले बेशक हमारे पांव नंगे थे
घिसे चप्पल होते थें
पर मन आजाद था
और पूरा गांव घूम लेते थें
आज जूते महंगे हैं
पर छोटा-सा सफर है
एक तरफ ऑफिस है
दूसरी तरफ क्वार्टर है
अब तो सुकूं की जिंदगी
नौकरी में कट रही है
जिंदगी भर की खुशियां बेचकर
महीने के अंत में सैलरी खरीद रही है

फिर,
एक दिन ऐसा आएगा
आंखों के ख्वाब मेरे बूढ़े हो जाएंगे
जो बुने थें आंखों ने सपने कभी
वो सब बिखर-से जाएंगे
जिंदगी भर की कमाई के कुछ कागजी टुकड़े
कुछ स्मृति चिन्ह के साथ
नौकरी से रुखसत हो जाएंगे

.............जारी

फिर,
मैं लौट आऊंगा
उसी गांव में
उसी दहलीज पर, उसी चौखट पर
पहले जहां आंगन होती थीं
अब वहां दीवारें खड़ी मिलेंगी
दूध पीते बच्चे हो गए हैं अब बड़े
संभालने लगे वे अपनी दुनियादारी
जिन सबके लिए मेरा चेहरा अनजान होगा
उन्हें लगेगा मैं घर में कोई मेहमान होउंगा
दीवारों पर उग गई घास
जाले लगे मकान भी
पहचानने से इंकार कर जाएंगे

और..
पहचानेंगे भी मुझे वह क्यों भला
मैं ही भला कब
उनसे कोई यारी निभा पाया
ना कभी उनकी खुशियों में
ना उनके गम में शरीक हो पाया
भैया-भौजी, चाचा-चाची, नाना-नानी
सब रिश्तेदारी मोबाइल पर ही निभा पाया
दूर शहर की नौकरी में
कुछ ऐसे मजबूर रहा
सुख-चैन, सुकूं - सबसे दूर रहा
गांव की नाराजगी भी तो
जायज ही होगी
हमने भी तो गांव में मां को छोड़कर
दूर शहर से दिल्लगी कर ली थी

नौकरी के चक्कर में
घर का रहा ना बाजार हाट का
जैसे मैं बन गया धोबी का कुत्ता
ना घर का ना घाट का..
....

तुझसे पूछ रहा हूँ मन!

रवि कहर
बहुकार्य कार्मिक
राजभाषा शाखा

तेरे जैसा कहाँ से लाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन,
तुझको सुख कैसे पहुँचाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।

आवारा तू पनघट; गलियाँ; गाँव; शहर का मोल करे!
तेरी राह किसे दिखलाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

कभी तू हँसता; कभी तू रोता; कभी-कभी चिल्लाता है!
दर्द तिरा मैं कैसे मिटाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

कभी धरा तो कभी समन्दर; कभी गगन की सैर करे!
तुझ पर कैसे रोक लगाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

कभी-कभी सपनों में आकर; मुझसे तू मिल लेता है!
मगर तुझे मैं कैसे पाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

इसकी; उसकी; अपनी ख़्वाहिश; तू ने तो बतला दी है!
देव "कहर" कैसे बन जाऊँ
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।
तुझसे पूछ रहा हूँ मन।।

चाहत थी चाँद पे जाने की...

प्रियेश कुमार
बहुकार्य कार्मिक
प्रेषण शाखा

चाहत थी चाँद पे जाने की
क्या-क्या न कर जाने की
जिन ख्वाबों ने नींद उड़ायें
उन ख्वाबों पे मर जाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

था देश - विदेश घूमना
हर घाटी-दर्रा चूमना
जो पर्वत था सबसे ऊँचा
उस पर्वत से उड़ जाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

राह ताकती दो आँखे हैं
समय काटती दो आँखे हैं
बुझते दीपक जिन आँखो के
उन आँखों में चमक जगाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

कुछ समझदारी दिखलानी थी
कुछ दीनदारी निभानी थी
रिश्तों के बीज से अच्छे बोने
खुशियों की फ़सल उगाने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

सपने तो सपने होते हैं
ये थोड़े ही अपने होते हैं
उम्र की तेज रफ्तार से
हिम्मत कहाँ टकराने की
चाहत थी चाँद पे जाने की...

मेरा भारत महान

अभिनव आनंद
कक्षा - सप्तम
पुत्र –श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

भारत हमारा देश

प्यारा न्यारा देश

भिन्न-भिन्न जातियाँ
भिन्न-भिन्न धर्म और भाषा
यह दुनिया को है
शांति का पाठ पढ़ाता

यहां की धरती रंग बिरंगी
खेतों में धूल है उड़ती
वीरों की पावन या धरती
हर दिल में है बसती यह धरती

भारत हमारा देश
दुनिया का सबसे प्यारा देश

मेरे पापा

पापा मेरे

सबसे अच्छे पापा
वे मुझे पढ़ाते-सीखाते
और चॉकलेट भी देते
बहुत प्यार करते मुझे
मेरे पापा

पर
कभी-कभी मुझे डांट भी देते
मेरे पापा

मेरे हर मुश्किल में साथ देते
मेरे पापा

और
मेरा होमवर्क भी कर देते
मेरे पापा

मेरे पापा
दुनिया के सबसे अच्छे पापा

अर्णव आनंद
कक्षा - पंचम
पुत्र – श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यादों के साये ...

प्रियेश कुमार
बहुकार्य कार्मिक
प्रेषण शाखा

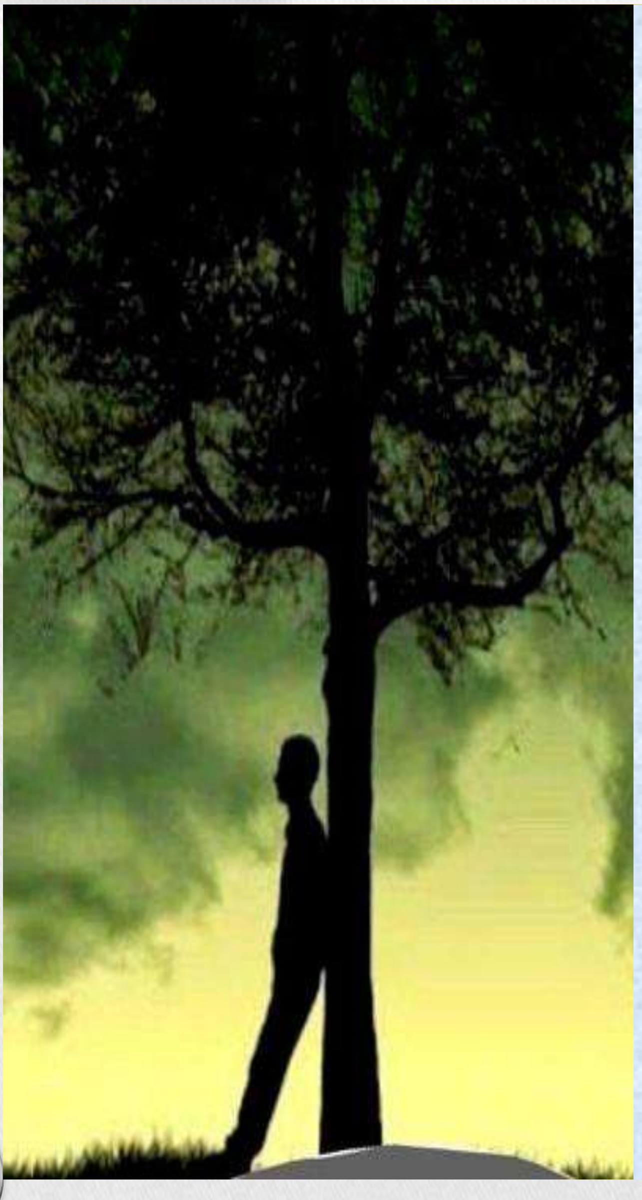

जीवन की चिलमिल धूप में
यादों के साये भाते हैं,
उर के झिर-झिर संदूक में
यादों के साये भाते हैं,

अवसाद नहीं, उन्माद नहीं
जीवन का ही तो रंग है,
अतीत से जुड़ा
हाँ, प्रीत से जुड़ा,
वर्त्तमान का एक अंग है ;

जीवन-नद का यह मनोरम तट
जहाँ बैठ के हम सुस्ताते हैं,
जीवन की चिलमिल धूप में
यादों के साये भाते हैं...

सब को प्यारा रहा

रवि कहर
बहुकार्य कार्मिक
राजभाषा शाखा

जब तलक़ तेरी रहमत का आँचल मिला
मैं सितारा रहा; सब को प्यारा रहा,
तम भी छाया न था; ग़म भी आया न था
जब तलक़ तेरी आँखों का तारा रहा।

अब नहीं वो ख़ुशी
ना ही वो प्यार है,
आज चारों तरफ़
सिर्फ मजधार है।
बचके जाऊँ कहाँ; तुझको पाऊँ कहाँ!
दूर तुझसे मैं ख़ुद ही तो जाता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

हर घड़ी हर पहर
अब मैं बेचैन हूँ,
दिन हूँ मुश्किल भरा
और बुझी रैन हूँ।
ये मज़ा दौलती; ये नशा शोहरती!
दूर तुझसे ये मुझको कराता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

पास दौलत भी है
साथ शोहरत भी है,
रूप-गुण से भरी
एक औरत भी है।
पर तेरी वो दुआएं नहीं हैं कहीं!
सब को पाने में "जन्नत" गँवाता रहा।
जब तलक़ तेरी --- ..

हर घड़ी हर ख़ुशी
मुझको हासिल हुई,
मेरी चाहत की शय
मेरे क़ाबिल हुई।
तेरी ममता-सा सुख न ख़रीदा गया!
ख़ुद को यूँ ही "कहर" आजमाता रहा।
जब तलक़ तेरी ---..

हंसी के फव्वारे

भागीरथ साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

दांत का डॉक्टर- आपका दांत निकालना पड़ेगा क्योंकि ये सड़ चुका है ।
राजू- हां तो कितने पैसे लगेंगे ?
दांत का डॉक्टर- बस 500 रुपये लगेंगे ।
राजू- 50 रुपये ले लो और थोड़ा सा ढीला कर दो, निकाल तो मैं खुद लूंगा ।

पूजा के समय पत्नी ने पति से पूछा -
पत्नी- सुनो जी आपको आरती याद है न?
पति- हां... वो पतली सी, वही न?
इसके बाद भगवान की बाद में, पति की 'पूजा' पहले हुई।

लड़की का एक्सीडेंट हो गया ।
डॉक्टर - आपके पैर खराब हो गए हैं ।
लड़की - क्या ये सही नहीं होंगे?
डॉक्टर – नहीं, इनको काटना पड़ेगा ।
लड़की - अरे मुझे उसकी टेंशन नहीं है ।
दरअसल मैंने कल ही नया सैंडल खरीदा है,
और उस दुकान पर लिखा था- "बिका माल वापस नहीं होगा"।

डॉक्टर- चश्मा किसके लिए बनवाना है?
बब्लू- टीचर के लिए ।
डॉक्टर- पर क्यों?
बब्लू- क्योंकि उन्हें मैं हमेशा गधा ही नजर आता हूं ।

राजभाषा शाखा द्वारा किए गए विविध क्रिया-कलाप व उपलब्धियां

(सितम्बर, 2023 से मार्च. 2024 तक)

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा -2023 पर विशेष प्रयास

हिंदी दिवस-2023 का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14-09-2023 से दिनांक 29-09-2023 तक किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली के निर्देशानुसार इस वर्ष हिंदी दिवस का आयोजन 14 सितम्बर 2023 को पुणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के साथ किया गया। उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में कार्यरत **श्री पोलीकार्प सोरैंग, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी** ने इस सम्मेलन में उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर का प्रतिनिधित्व किया।

पखवाड़ा के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की गतिविधियाँ

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के प्रवेश द्वार पर सार्वजनिक सूचना के लिए एक बड़ा बैनर लगाया गया। इस वर्ष उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के अधीनस्थ कार्यरत सभी 18 कार्यालयों में राजभाषा पखवाड़ा का बैनर तथा हिंदी भाषा में कुछ महत्वपूर्ण सूक्तियाँ मुद्रित कर परिचालित की गई ताकि शाखा कार्यालयों में तैनात कार्मिक भी राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूक हो सकें तथा उन्हें भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित किया जा सके। इसके अतिरिक्त राजभाषा पखवाड़ा के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर के समस्त कंप्यूटरों में वालपेपर एवं स्क्रीन-सेवर के रूप राजभाषा संबंधी डिजीटल डिस्पले लगवाए गए थे।

पखवाड़ा के दौरान उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर द्वारा किए गए प्रयास

समस्त शाखा कार्यालयों को अपने यहाँ सभी कंप्यूटरों में राजभाषा संबंधी डिजीटल डिस्पले इंस्टाल करने के लिए ई-मेल किया गया था।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान यह पूर्ण रूप से प्रयास किया गया कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम के निर्देशानुसार कार्रवाई की जाए। मुख्यालय के निर्देशानुसार 4 प्रतियोगिताओं यथा हिंदी निबन्ध प्रतियोगिता, राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण एवं हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन दो वर्गों क्रमशः हिंदी भाषी वर्ग तथा हिंदीतर भाषी वर्ग में किया गया था। इन प्रतियोगिताओं में उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर तथा इसके अंतर्गत आने वाले शाखा कार्यालयों के कार्मिकों ने भी बढ़-चढ कर हिस्सा लिया।

हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में दिनांक 18-09-2023 को हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में कुल 16 कार्मिकों ने प्रतिभागिता की थी।

हिंदी टिप्पण- आलेखन प्रतियोगिता

दिनांक 20-09-2023 को उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में दोनो वर्गों में कुल 15 कार्मिकों ने भाग लिया था।

राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन

राजभाषा पखवाड़ा के तहत उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर में दिनांक 22-09-2023 को राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में मूलतः राजभाषा हिंदी, राजभाषा नीति-नियमों तथा राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम से जुड़ें प्रश्नों को शामिल किया गया था। इस प्रतियोगिता में कार्यालय के 15 कार्मिकों ने भाग लिया था।

हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर में मुख्यालय के निर्देशानुसार दिनांक 22-09-2023 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका श्री देबाशीष बरूआ, उप निदेशक, श्री मृदुल चक्रवर्ती, साहयक निदेशक एवं श्री रमेश साव, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने निभाई थी। इस प्रतियोगिता में कर्मचारियों के उत्साहवर्धन के लिए स्वयं संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री अमरनाथ तिवारी जी उपस्थित हुए थें। इस प्रतियोगिता में दोनो वर्गों में कुल 12 कार्मिकों ने भाग लिया था।

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

मुख्यालय के निर्देशानुसार राजभाषा पखवाड़ा-2023 के दौरान कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरूकता फैलाने तथा उन्हें हिंदी में काम कर पाने योग्य बनाने के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया था।

इस कार्यशाला में उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर तथा अधीनस्थ कार्यालयों के उन कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया जो अपने शाखाओं से राजभाषा प्रगति रिपोर्ट उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर को भेजते हैं तथा जिन्होंने हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इस कार्यशाला में भारत सरकार की राजभाषा नीति, निगम में राजभाषा कार्यान्वयन, हिंदी में टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, ई-ऑफिस में हिंदी में कार्य तथा ई-टूल्स के बारे में जानकारी दी गई एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट सुचारू रूप से भरने का अभ्यास भी कराया गया। इस कार्यशाला में कुल 29 कार्मिकों ने भाग लिया था।

कार्यशाला के समापन में उपस्थित सभी प्रतिभागियों को उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम के प्रभारी अधिकारी श्री अमरनाथ तिवारी, संयुक्त निदेशक (प्रभारी) द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस कार्यशाला में भाग लेने वाले कार्मिकों के अध्ययन सामग्री के साथ-साथ अंग्रेजी से हिंदी शब्दकोश भी उपलब्ध करवाया गया था जिससे हिंदी में काम करते समय उन्हें किसी तरह की असुविधा का सामना न करना पड़े।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर, कर्मचारी राज्य बीमा निगम में राजभाषा पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन दिनांक 29-09-2023 को किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वीर एवं हास्य रस के प्रख्यात कवि श्री नवीन कुमार सिंह, विशेष अतिथि श्री अरूण पांडेय, सेवा निवृत्त अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम तथा संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री अमरनाथ तिवारी उपस्थित हुए थें। इस कार्यक्रम का आयोजन क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के साल्ट लेक स्थित ऑडीटोरियम में किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन तथा सरस्वती वंदना के साथ किया गया एवं तदुपरान्त समस्त अतिथियों का स्वागत सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश साव ने किया। श्री साव ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा पखवाड़ा तथा पखवाड़ा के दौरान आयोजित गतिविधियों की जानकारी दी तथा साथ ही उपस्थित सभी को राजभाषा के प्रति हमारे संवैधानिक दायित्वों के बारे में बताया।

इसके उपरान्त हिंदी दिवस पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित कुमार साह जी का विडियो संदेश उपस्थित सभा को दिखाया गया जिससे उपस्थित सभी कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति दायित्वों के बारे में जानकारी मिली तथा राजभाषा विभाग के उपलब्धियों के बारे में भी जानकारी मिली।

तत्पश्चात उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की वार्षिक राजभाषा पत्रिका सेनानी के 14 वें अंक का राजभाषा विशेषांक रूप में विमोचित किया गया। यह विमोचन उपस्थित अतिथियों के कर-कमलों द्वारा किया गया।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता:

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह की गतिविधियाँ

इसके पश्चात श्री भागीरथ साव, क. अनुवाद अधिकारी द्वारा राजभाषा पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किए गए। प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया एवं पुरस्कार की यथा निर्धारित राशि प्रतिभागियों के बैंक खाते में भेज दी गई।

पुरस्कार वितरण के पश्चात उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के संयुक्त निदेशक (प्रभारी) श्री अमरनाथ तिवारी द्वारा कार्यालय के समस्त कार्मिकों को संबोधित किया गया। अपने संबोधन में प्रभारी अधिकारी महोदय ने सभी कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति हमारे संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करने का निदेश दिया तथा सभी से अनुरोध किया कि वे अपना अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का प्रयास करें। इस अवसर पर मुख्यालय के निर्देशानुसार प्रभारी अधिकारी महोदय ने राजभाषा के संबंध में महानिदेशक महोदय की अपील एवं श्रम एवं रोजगार मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव जी तथा राज्य मंत्री श्री रामेश्वर तेली जी का संदेश सबको पढ़कर सुनाया।

प्रभारी अधिकारी के संबोधन के पश्चात इस अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के कर्मचारियों द्वारा किया गया था। उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर में तैनात श्री रवि कहर, बहु कार्य कार्मिक/राजभाषा ने इस सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर में तैनात श्री मलय मांजी, श्री मणिशंकर पाणि, श्री आदित्य जायसवाल एवं सुश्री मनीषा सोनकर ने एक गीत पर समूह गान की प्रस्तुति की।

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह की गतिविधियाँ

तदुपरान्त उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर के कर्मचारियों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन पर एक लघु नाट्य प्रस्तुति की गई। यह प्रस्तुति श्री मणिशंकर पाणि तथा श्री आशुतोष मिश्र द्वारा की गई। साथ ही इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में श्री अरूण पांडेय, सेवानिवृत्त अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम उपस्थित हुए थें जिन्होंने इस अवसर पर अपने कार्यकाल में राजभाषा कार्यान्वयन पर उनके अनुभव को साझा किया तथा उपस्थित सबका ज्ञानवर्धन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के अगले चरण में इस आयोजन के मुख्य अतिथि श्री नवीन कुमार सिंह जी द्वारा प्रस्तुति दी गई। श्री नवीन ने अपनी हास्य एवं देशभक्ति कविताओं द्वारा हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में सभी श्रोताओं का मनोरंजन किया तथा राजभाषा हिंदी में काम करने के लिए उन्हें प्रेरित किया।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री रमेश साव ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं उप क्षेत्रीय कार्यालय बैरकपुर तथा इसके अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा के दौरान राजभाषा शाखा को अपना सहयोग प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई।

राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्य

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान निबंध प्रतियोगिता

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान दिनांक – 02.11.2023 को राजभाषा शाखा द्वारा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 2 विजेता प्रतिभागियों को कार्यालय प्रमुख द्वारा नकद पुरस्कार क्रमशः 1500/- रूपये एवं 1000/- रूपये एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया ।

प्रथम –
करिश्मा कुमारी
बहुकार्य कार्मिक, वसूली शाखा

द्वितीय –
स्वागता भट्टाचार्जी,
आशुलिपिक, निजी सचिव कक्ष

राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्य

हिंदी मासिक रिपोर्ट भरने संबंधी प्रशिक्षण

प्रत्येक शाखा में हिन्दी रिपोर्ट बनाने के लिए नामित कार्मिकों को राजभाषा शाखा द्‌वारा दो घंटों का प्रशिक्षण दिनांक 21.12.2023 को दिया गया ।

इसके पहले भी यह प्रशिक्षण सितम्बर महीने में 26.9.2023 को दिया गया था।

राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्य

हिंदी लिप्यंतरण (Phonetic Typing) संबंधी प्रशिक्षण

चूंकि कार्यालय में टंकण प्रशिक्षण हेतु काफी संख्या शेष है और प्रत्येक सत्र में एक या दो कार्मिकों को प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है तो प्रशिक्षण पूरा होने में काफी समय लगेगा।

इसलिए राजभाषा शाखा द्वारा एक चरणबद्ध तरीके से दिसम्बर महीने में एक कार्यक्रम बनाकर एक-दो घंटे के लिए 8 लिपिकों को Transliteration / Phonetic का प्रशिक्षण दिया गया जिससे कि वे प्रारंभिक स्तर पर अपना टंकण कार्य आसानी से कर सकें ।

राजभाषा शाखा द्वारा किए गए कार्य

कार्यालय की वेबसाइट का द्विभाषीकरण

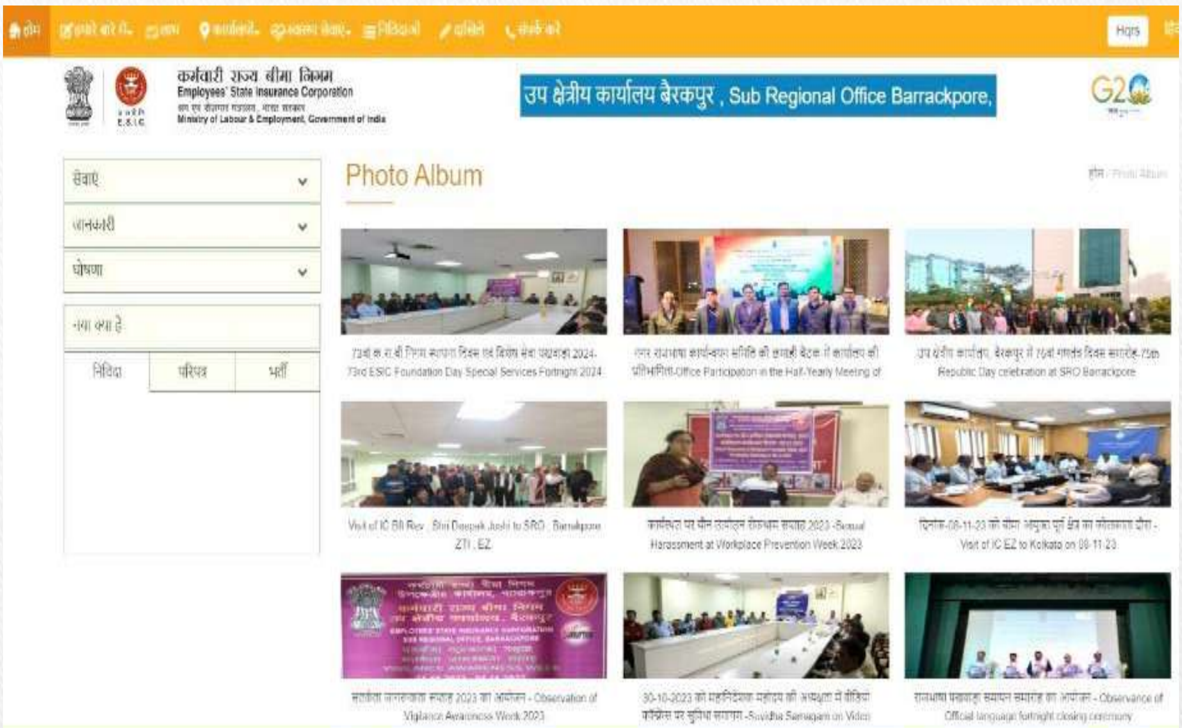

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका सेनानी (अंक – 14, वर्ष – 2023-24 का प्रकाशन किया जा चुका है । इसका ई-वर्जन हमारे कार्यालय की वेबसाइट पर और राजभाषा शाखा के वेबसाइट पर अपलोड किया गया ।

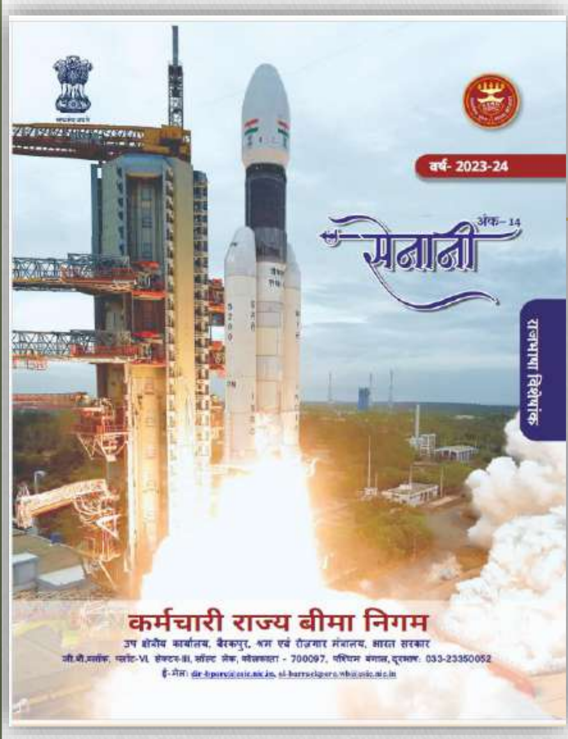

आप इसे निम्न क्यू आर कोड को स्कैन कर के पढ़ा जा सकता है –

पत्रिका को निम्न ऑनलाइन लिंक पर पढ़ा जा सकता है – https://online.fliphtml5.com/orxte/wkwd/index.html

पत्रिका, राजभाषा विभाग के वेबसाइट पर ई-पत्रिका पुस्तकालय में क्रम संख्या-01914(ofwb6589) पर भी उपलब्ध है।

पत्रिका, उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर की वेबसाइट पर भी उपलब्ध है जिसका लिंक निम्नवत् है – https://srobarrackpore.esic.gov.in/attachments/publicationfile/19f0c8fac3c2a8c3412b2b1cf54084ed.pdf

राजभाषायी निरीक्षण

दिनांक – 18.01.2024 को श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा इस कार्यालय में राजभाषायी निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के उपरांत उन्होंने अपने निरीक्षण रिपोर्ट में **“बहुत अच्छा”** अभ्युक्ति दिया ।

राजभाषायी निरीक्षण

लक्ष्य 25% शाखा कार्यालयों का निरीक्षण है, लेकिन, उप क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत सभी 11 शाखाओं एवं 18 शाखाओं में राजभाषायी निरीक्षण श्री रमेश साव, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं श्री मनोज कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी एवं श्री भागीरथ साव, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी द्वारा किया गया अर्थात् राजभाषायी निरीक्षण 100% किया गया ।

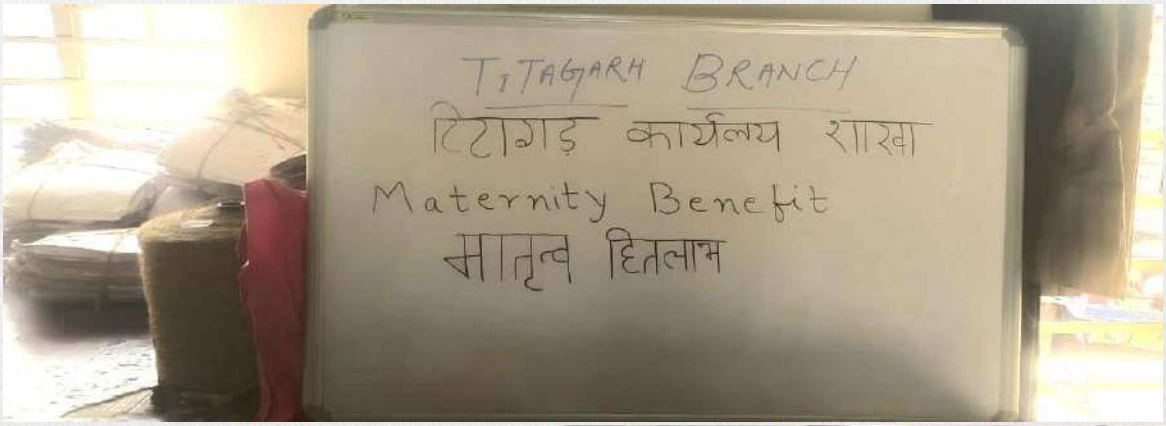

अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला

दिनांक – 18.01.2024 को इस कार्यालय में अधिकारियों के लिए एक विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री निर्मल कुमार दुबे, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्व क्षेत्र), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा व्याख्यान दिया गया और राजभाषा कार्यान्वयन संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किया गया ।

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

वार्षिक कार्यक्रमानुसार,
प्रत्येक तिमाही एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

वार्षिक कार्यक्रमानुसार, प्रत्येक तिमाही विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन समय पर किया गया ।

मन की भाषा, प्रेम की भाषा
हिंदी है भारत जन की भाषा

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

नराकास की छमाही बैठक में प्रतिभागिता

दिनांक 31.1.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख के साथ-साथ राजभाषा शाखा के अधिकारियों (सहायक निदेशक, राजभाषा एवं वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी व कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी) ने भाग लिया ।

नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख (बायें से द्‌वितीय) के साथ अन्य अधिकारी व कार्मिकगण

शर्म नहीं शक्ति है हिंदी

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

नराकास की विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार

दिनांक 31.1.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय के एक कार्मिक – श्री मणि शंकर पाणि, प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा को यात्रा वृतांत लेखन प्रतियोगिता के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के अंतर्गत 2500/- रूपये का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।

श्री मणि शंकर पाणि, प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा - पुरस्कार ग्रहण करते हुए

हिन्दी
हमारी शान है,
देश का
अभिमान है..

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

नराकास की विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार

- दिनांक 31.1.2024 को नराकास (उपक्रम) कोलकाता की छमाही बैठक में कार्यालय के एक कार्मिक – श्री फागुन आइच, प्रवर श्रेणी लिपिक, शाखा कार्यालय, कल्याणी को हिंदी निबंध प्रतियोगिता के लिए तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार के अंतर्गत 2500/- रूपये का नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किया गया ।

श्री फागुन आइच, प्रवर श्रेणी लिपिक,
शाखा कार्यालय, कल्याणी – पुरस्कार ग्रहण करते हुए

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।
Hindi is the simplest source of expression of our Nation.
- सुमित्रानंदन पंत (Sumitra Nandan Pant)

राजभाषा शाखा की उपलब्धियां

नराकास (उपक्रम), कोलकाता की हिंदी गृह पत्रिका अभिव्यक्ति अंक – 29 का सम्पादन कार्य श्री रमेश साव सहायक निदेशक (राजभाषा) द्‌वारा किया गया ।

पत्रिका विमोचन का एक चित्र

कार्यालय में आयोजित विविध गतिविधियां और कार्यकलाप

(चित्रों के माध्यम से)

(सितम्बर, 2023 से मार्च. 2024 तक)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
दिनांक 11-09-2023

स्वच्छता ही सेवा का आयोजन

कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न रोकथाम सप्ताह, 2023

75वां गणतंत्र दिवस समारोह

73 वें क.रा.बी. स्थापना दिवस एवं विशेष सेवा पखवाड़ा-2024 के समापन समारोह का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

मृत्युंजय प्रभाकर
सहायक निदेशक (वित्त)

दिनांक – 08.03.2024 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में श्री मृत्युंजय प्रभाकर, सहायक निदेशक ने सभा को संबोधित किया । प्रस्तुत है – संबोधन के कुछ अंश -

आप सभी को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं। विश्वभर में महिला दिवस 08 मार्च को मनाया जाता है । नारी के सम्मान में दो पंक्ति में कहना चाहूँगा -

हज़ारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए
हज़ारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए
हज़ारों बूंद चाहिए समुद्र बनाने के लिए
पर एक स्त्री अकेली ही काफी है
घर को स्वर्ग बनाने के लिए ..

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सबसे पहले 1909 में मनाया गया था। इसकी खास वजह ये है कि इसी दिन अमेरिका के महिलाओं ने अपने अधिकारों के मांग की लड़ाई शुरू की थी । बाद में सोशलिस्ट पार्टी द्वारा इस दिन को महिला दिवस मनाने का ऐलान किया गया और इसे आधिकारिक मान्यता 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने थीम के साथ इसे मनाना शुरू किया। फिर इसके बाद यूरोप की महिलाओं ने भी बाद में 8 मार्च को रैलियां निकाली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं व उनकी उपलब्धियों के प्रति सम्मान प्रक्रट कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सबसे पहले 1909 में मनाया गया था। इसकी खास वजह ये है कि इसी दिन अमेरिका के महिलाओं ने अपने अधिकारों के मांग की लड़ाई शुरू की थी । बाद में सोशलिस्ट पार्टी द्वारा इस दिन को महिला दिवस मनाने का ऐलान किया गया और इसे आधिकारिक मान्यता 1975 में संयुक्त राष्ट्र ने थीम के साथ इसे मनाना शुरू किया। फिर इसके बाद यूरोप की महिलाओं ने भी बाद में 8 मार्च को रैलियां निकाली। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं व उनकी उपलब्धियों के प्रति सम्मान प्रक्रट कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

नारी के रूप के सम्मान में दो पंक्ति:-

पापा की वो लाडली,
मां की वो दुलारी दिल से है नादान,
पर करती है सब पर जान कुर्बान,
है भाइयों की मुस्कान, परिवार की शान

इस दिवस को मनाने के पीछे एक मात्र उद्देश्य है महिलाओं के प्रति समाज में सम्मान की भावना उत्पन्न करना तथा उन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिलवाना। इस दिवस को दुनियाभर में धूमधाम से मनाय जाता है। विभिन्न संस्थानों दफ्तर कॉलेज स्कूल आदि जगहों पर इस दिन क्विज कंपटीशन, भाषण, लेखन, स्पीच प्रतियोगिताएं व सेमीनार समेत अन्य रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ।

नारी के शिक्षित करने के बारें में दो पंक्ति-

अगर एक आदमी को शिक्षित किया जाता है तब एक आदमी ही शिक्षित होता है, लेकिन जब एक महिला को शिक्षित किया जाता है। तब एक पीढ़ी शिक्षित होती है।

हमारे देश में नारियाँ दुर्गा और काली के रूप में पूजे जाने के वावजूद भी आज के आधुनिक समाज में भी हर कदम पे उन्हें बराबरी और अपने हक के लिए जद्दोदहद करनी पड़ती है। इस विडंबना को रेखांकित करने वाली एक बहुत ही मर्मस्पर्शी पंक्ति है कि-

"एक तपती दोपहर है नारियों की जिंदगी

एक पथरीली डगर है नारियों की जिंदगी

चाहे हो अग्नि परीक्षा चाहे चौसर की बिसात

हर सदी में दाव पर है नारियों की जिंदगी।"

महिला के संबंध में कही गई कुछ पंक्ति इस प्रकार है कि–

कभी मां बन कर

कभी बहन बन कर

तो कभी पत्नी बन कर

एक आदमी को सही राह दिखाती है।

नारी को कभी कम न समझना

वो हर मोड़ पर आपका साथ निभाती है!

मैं कहूँगा की अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एक ही दिन क्यूं मनाएँ, इसे तो हम सभी को हर दिन माना चाहिए। इनके लिए दो पंक्ति :-

हर दिन होना चाहिए नारी के नाम
बिना रुके करती है वो हर काम ।
उनके लिए न करो समर्पित सिर्फ एक दिन
नारी को करो नमन प्रतिदिन ।

अंत में, मैं आप सभी स्त्री शक्ति को नमन करते हुए ये दो पंक्तियां आप सबकी श्रद्धा में अर्पित करना चाहूंगा कि–

आप ईश्वर की एक अनूठी रचना हैं ....आपके बिना हमारा वजूद नहीं होता ।

कुछ महत्वपूर्ण पत्र-परिपत्र

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
ईमेल Email: rajbhasha-hq@esic.nic.in
वेबसाइट Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या:ए-49/19/1/2018-रा.भा. दिनांक: 05 फरवरी, 2024

सेवा में,

1. सभी अपर आयुक्त एवं क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक/प्रभारी उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम।
2. सभी चिकित्सा अधीक्षक/संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम अस्पताल/आदर्श अस्पताल/चिकित्सा महाविद्यालय/दंत्य महाविद्यालय/नर्सिंग महाविद्यालय/स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान।
3. निदेशालय(चिकित्सा)दिल्ली/निदेशालय(चिकित्सा)नोएडा।
4. बीमा आयुक्त, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली।

विषय : अनुवाद अधिकारियों द्वारा हिंदी कार्यशालाओं में व्याख्यान देने पर मानदेय के भुगतान के संबंध में।

भारत सरकार, संसदीय राजभाषा समिति द्वारा प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला आयोजित करने पर बल दिया जाता है जिससे कार्मिकों में हिंदी कामकाज के प्रति और अधिक सजगता आए तथा अच्छे तरीके से राजभाषा कार्यान्वयन किया जा सके और लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। माननीय संसदीय समिति अपने राजभाषा निरीक्षण में गंभीरता से इस विषय को देखती है।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी कार्यशालाओं के संबंध में निदेश जारी किए जाते हैं जिसमें मानदेय की राशि में वृद्धि भी सम्मिलित है। कार्यशालाओं में व्याख्यान राजभाषा अधिकारी के साथ-साथ अनुवाद अधिकारियों को भी आबंटित किए जाते हैं। **नियमानुसार सभी व्याख्याता मानदेय के पात्र हैं।**

विगत कुछ समय से कुछ निगम कार्यालयों से सूचनाएं प्राप्त हो रही है कि कुछ राजभाषा कार्मिकों को हिंदी कार्यशालाओं में व्याख्यान देने पर मानदेय का भुगतान नहीं किया जा रहा। यह निगम मुख्यालय के ज्ञापन संख्या ए-49/12/5/80-हिन्दी, दिनांक 15.12.1981 तथा मुख्यालय परिपत्र संख्या ए-49/12/1/2010-रा.भा., दिनांक 02.08.2010 की अवहेलना करना है जो कि गंभीर मामला है।

सक्षम प्राधिकारी के संज्ञान में यह मामला लाया गया और उन्होंने निदेश दिए हैं कि उपर्युक्त कथित का.ज्ञा. तथा परिपत्र का अनुपालन करते हुए राजभाषा कार्मिकों (सभी पद) को हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देने पर मानदेय का भुगतान किया जाए।

ऐसा न किए जाने पर भविष्य में ऐसी कोई सूचना प्राप्त होने पर मामला मुख्यालय में सक्षम अधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा।

यह आदेश राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी और आंचलिक प्रशिक्षण अकादमी पर भी लागू होंगे।

इसे सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन और आदेश से जारी किया जाता है।

भवदीय,

05.02.2024

(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

प्रतिलिपि:

1. वेबसाइट सामग्री प्रबंधक को इसे क.रा.बी.निगम की वेबसाइट पर अपलोड करने के अनुरोध सहित।

I/989639/2024

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
ईमेल/Email: rajbhasha-hq@esic.nic.in
वेबसाइट/Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या: ए-49/19/1/2018-रा.भा. दिनांक: जनवरी, 2024

कार्यालय ज्ञापन

विषय: हिन्दी कार्यशाला के आयोजन पर मध्याह्न भोजन एवं जलपान पर खर्च की जाने वाली राशि में वृद्धि के संबंध में।

उपर्युक्त विषय पर इस कार्यालय के दिनांक 07 मई, 2018 के कार्यालय ज्ञापन संख्या ए-49/19/1/2018-रा.भा./कार्यशाला-सामान्य नीति का अधिक्रमण करते हुए, महानिदेशक महोदय ने निगम इकाइयों में आयोजित की जाने वाली पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशालाओं में मध्याह्न भोजन एवं जलपान पर खर्च की जाने वाली राशि को निम्नानुसार बढ़ाने का अनुमोदन प्रदान किया है:-

क्र.सं.	मद	परिशोधित दरें
1.	जलपान (Tea+Snacks)	रु.100/- (सुबह+शाम)
2.	मध्याह्न भोजन (Lunch)	रु.350/-
	कुल (Total)	रु.450/- (without GST)

वित्त आयुक्त द्वारा दिनांक 14.12.2023 को समसंख्यक ई-फ़ाइल के टिप्पण पृष्ठ संख्या 69 पर वित्तीय सहमति प्रदान की गई है।

हिन्दी कार्यशालाओं में दिए जाने वाले मध्याह्न भोजन तथा जलपान के संबंध में अन्य बातें पूर्ववत रहेंगी।

Signed by Shyam Kumar
Date: 16-01-2024 15:06:59
Reason: Approved
(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

सेवा में,

1. बीमा आयुक्त (राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी), नई दिल्ली।
2. सभी अपर आयुक्त/क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय।
3. सभी निदेशक/प्रभारी संयुक्त/उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय।
4. सभी चिकित्सा अधीक्षक/संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम अस्पताल/महाविद्यालय।
5. निदेशक, निदेशालय (चिकित्सा) दिल्ली/नोएडा।
6. सभी निगम इकाइयों की वित्त एवं लेखा शाखा तथा राजभाषा शाखा में गार्ड फ़ाइल में अनुरक्षित करने हेतु।
7. वेबसाइट सामग्री प्रबंधक, मुख्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने हेतु।

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एंव रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
क.रा.बी.नि. Employees' State Insurance Corporation
E.S.I.C. (Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
PANCHDEEP BHAWAN, C.I.G. MARG, NEW DELHI-110 002
Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

सं. ए-49/19/24/1/2018-रा.भा.

दिनांक : 25.01.2022

सेवा में,

1. सभी क्षेत्रीय निदेशक/निदेशक/प्रभारी संयुक्त निदेशक, क.रा.बी. निगम।
2. सभी चिकित्सा अधीक्षक, क.रा.बी.नि. अस्पताल/ क.रा.बी.नि. आदर्श अस्पताल ।
3. निदेशालय(चि.) दिल्ली/नोएडा/के.के. नगर, चेन्नई।

विषय : हिंदी कार्यशाला के व्याख्याताओं के पारिश्रमिक की दर में वृद्धि।

महोदय/महोदया,

सक्षम प्राधिकारी ने हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान के लिए प्रचलित मानदेय की दरों संबंधी पूर्व आदेश संख्या ए-49/12/7/2008-रा.भा. दिनांक 05.08.2011 के अधिक्रमण में व्याख्याताओं के पारिश्रमिक में राजभाषा विभाग, भारत सरकार के संलग्न कार्यालय ज्ञापन संख्या 21034/11/2019-रा.भा.(प्रशि.) दिनांक 04.10.2021 के अनुसार परिशोधित दरों का अनुमोदन किया है। कृपया **संलग्न ज्ञापन के अनुदेशानुसार** पारिश्रमिक का भुगतान करें।

इसे अपर आयुक्त(वित्त) ने समसंख्यक फाइल के पृष्ठ सं 60/एन पर दिनांक 28.12.2021 को सहमति प्रदान कर दी है।

भवदीय,

संलग्न : यथोपरि

25.1.2022

(श्याम कुमार)

संयुक्त निदेशक(रा.भा.)

प्रतिलिपि :

1. संयुक्त निदेशक(वित्त)/उप निदेशक(वित्त)/सहायक निदेशक(वित्त), क्षेत्रीय कार्यालय/उप क्षेत्रीय कार्यालय/निदेशालय(चिकि.) दिल्ली/नोएडा/क.रा.बी. अस्पताल/क.रा.बी.नि. आदर्श अस्पताल।
2. वेबसाइट सामग्री प्रबंधक, मुख्यालय को वेबसाइट पर अपलोड करने हेतु।

25/1/2022

संयुक्त निदेशक(रा.भा.)

सं. 21034/11/2019-रा.भा.(प्रशि.)
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

नई दिल्ली-1, दिनांक 04.10.2021

कार्यालय ज्ञापन

विषय:- केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अधिकारियों तथा कर्मचारियों की क्षमता निर्माण के लिए हिंदी भाषा कार्यशालाओं का आयोजन - प्रति सत्र पारिश्रमिक की राशि में वृद्धि ।

सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशालाओं में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित अतिथि वक्ताओं को भुगतान किए जाने वाले पारिश्रमिक की दरों को निम्नानुसार संशोधित किया जाता है:-

(क) केंद्र/राज्य सरकार के सेवारत अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 75 मिनट के प्रति सत्र के लिए रू.750/- (रूपये सात सौ पचास मात्र) का पारिश्रमिक देय होगा । किसी भी वक्ता को एक वर्ष में पारिश्रमिक के रूप में देय राशि रू. 5000/- (रूपये पांच हजार मात्र) से अधिक नहीं होगी ।

(ख) केंद्र/राज्य सरकार के सेवारत अधिकारियों/कर्मचारियों से भिन्न अन्य अतिथि वक्ताओं को 75 मिनट के प्रति सत्र के लिए रू.1500/- (रूपये एक हजार पांच सौ मात्र) (अधिकतम 30 दिनों या 60 कक्षाओं तक के लिए) का पारिश्रमिक देय होगा । रू. 5000/- (रूपये पांच हजार मात्र) प्रति वर्ष के देय पारिश्रमिक की सीमा इस श्रेणी पर लागू नहीं होगी ।

(ग) स्थानीय अतिथि वक्ताओं को प्रशिक्षण में कक्षाएं लेने के लिए आवास से कार्यालय तथा वापसी का किराया भाड़े का भुगतान स्व प्रमाणन के आधार पर वास्तविक टैक्सी किराया सरकार द्वारा अधिसूचित दर के आधार पर देय होगा जो कि अधिकतम रू.750/- (रूपये सात सौ पचास मात्र) देय होगा ।

2. यह कार्यालय ज्ञापन गृह मंत्रालय के वित्त प्रभाग की दिनांक 26.08.2021 की डायरी सं. 3531705, कार्यालय एएस एंड एफए(एच) द्वारा दी गई उनकी सहमति से जारी किया जा रहा है ।

3. ये आदेश इस कार्यालय ज्ञापन के जारी होने की तारीख से लागू होंगे ।

(आनंद कुमार)
निदेशक (प्रशि.)

प्रतिलिपि निम्नलिखित को प्रेषित:-

1. भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग (मानक सूची के अनुसार)
2. भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली ।
3. संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली ।
4. केंद्रीय सतर्कता आयोग, नई दिल्ली ।
5. भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, नई दिल्ली ।
6. आंतरिक वित्त (गृह)-II, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली ।
7. निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली ।

ए-49/19/1/2018-रा.भा.

I/989625/2024

मुख्यालय/Headquarters
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
Employees' State Insurance Corporation
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
ESIC
सत्यमेव जयते
पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110002
ईमेल/Email: rajbhasha-hq@esic.nic.in
वेबसाइट/Website: www.esic.nic.in / www.esic.in

संख्या:ए-49/13/3/2022-रा.भा. दिनांक: जनवरी, 2024

कार्यालय ज्ञापन

विषय: हिन्दी की तिमाही बैठकों में जलपान पर खर्च की जाने वाली राशि में वृद्धि के संबंध में।

उपर्युक्त विषय पर इस कार्यालय के दिनांक 12.11.2013 के कार्यालय ज्ञापन संख्या ए-49/16/3/2012-रा.भा. का अधिक्रमण करते हुए, महानिदेशक महोदय ने निगम इकाइयों में आयोजित की जाने वाली हिन्दी की तिमाही बैठकों में जलपान पर खर्च की जाने वाली राशि को निम्नानुसार बढ़ाने का अनुमोदन प्रदान किया है:-

क.सं.	मद	मौजूदा राशि	परिशोधित राशि
1.	जलपान (Tea+Snacks)	रु.40/-प्रति व्यक्ति	रु.100/- प्रति व्यक्ति

वित्त आयुक्त द्वारा दिनांक 14.12.2023 को ई-फ़ाइल संख्या ए-49/19/1/2018-रा.भा. के टिप्पण पृष्ठ संख्या 69 पर वित्तीय सहमति प्रदान की गई है।

Signed by Shyam Kumar
Date: 16-01-2024 15:05:28
Reason: Approved
(श्याम कुमार)
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)

सेवा में,

1. बीमा आयुक्त (राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी), नई दिल्ली।
2. सभी अपर आयुक्त/क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय।
3. सभी निदेशक/प्रभारी संयुक्त/उप निदेशक, उप क्षेत्रीय कार्यालय।
4. सभी चिकित्सा अधीक्षक/संकायाध्यक्ष, क.रा.बी.निगम अस्पताल/महाविद्यालय।
5. निदेशक, निदेशालय (चिकित्सा) दिल्ली/नोएडा।
6. सभी निगम इकाइयों की वित्त एवं लेखा शाखा तथा राजभाषा शाखा में गार्ड फ़ाइल में अनुरक्षित करने हेतु।
7. वेबसाइट सामग्री प्रबंधक, मुख्यालय की वेबसाइट पर अपलोड करने हेतु।

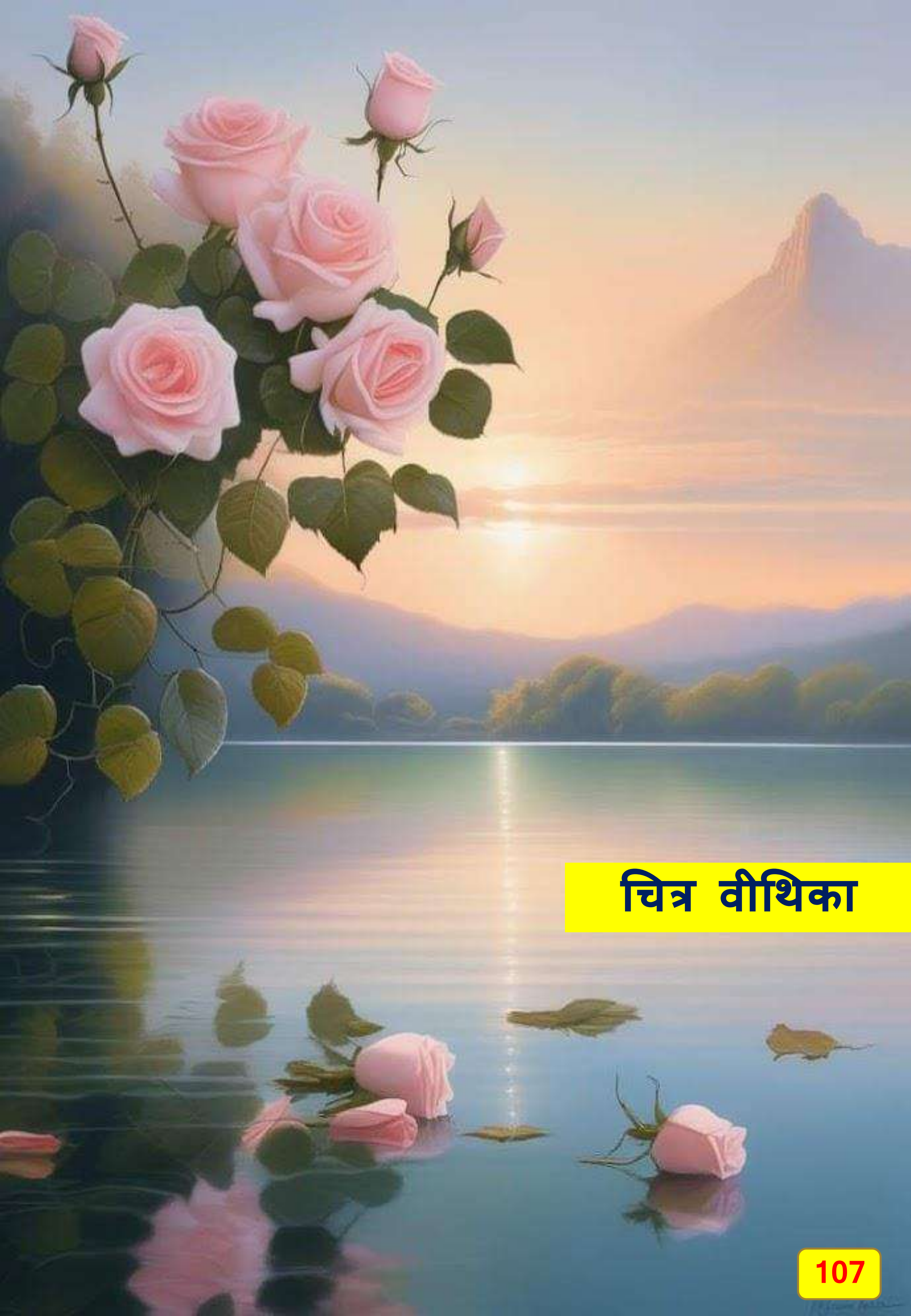

चित्र वीथिका

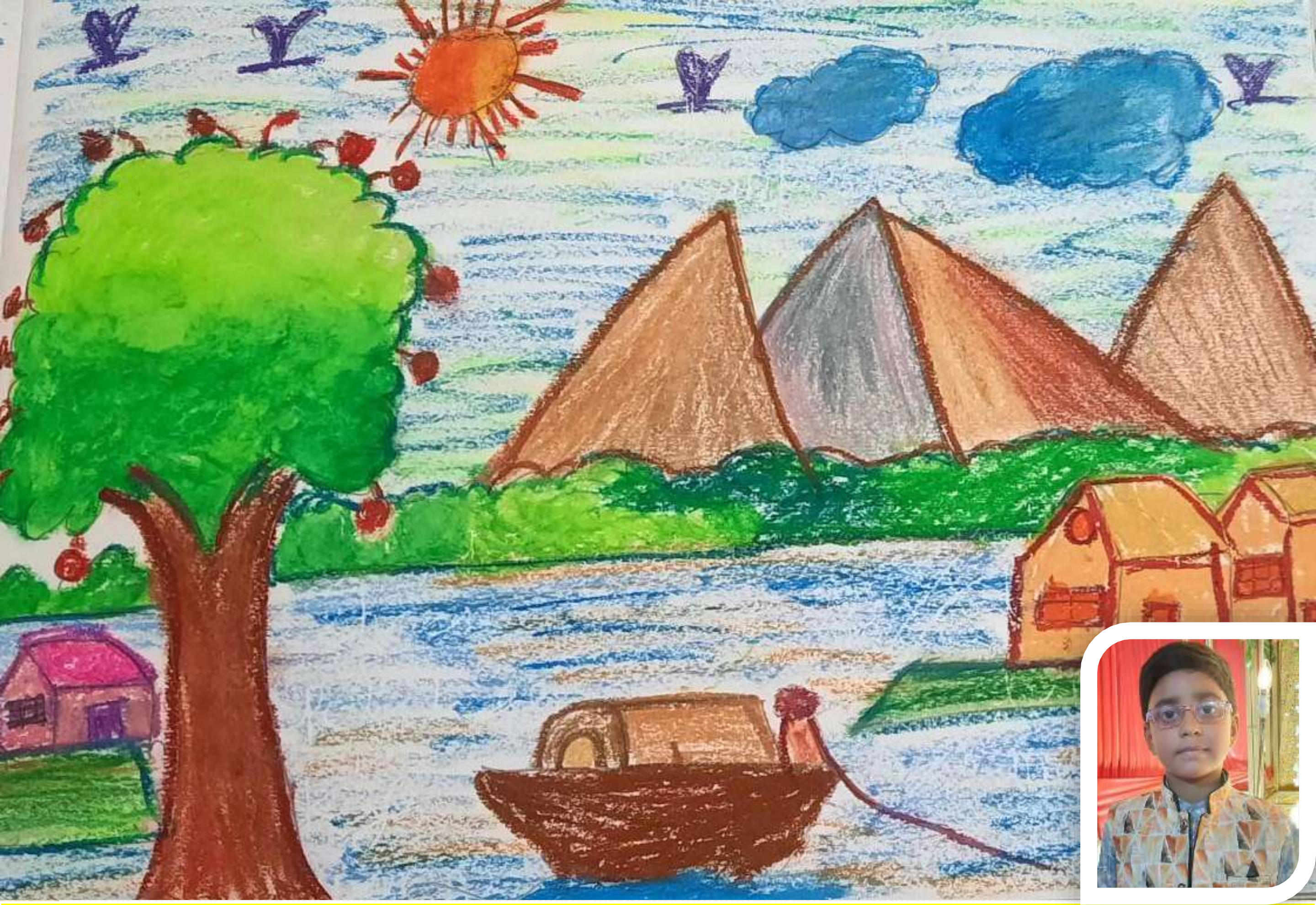

आयुष शिकदार, कक्षा – प्रथम, पुत्र – श्री अभिजीत कुमार शिकदार, व्यैक्तिक सहायक

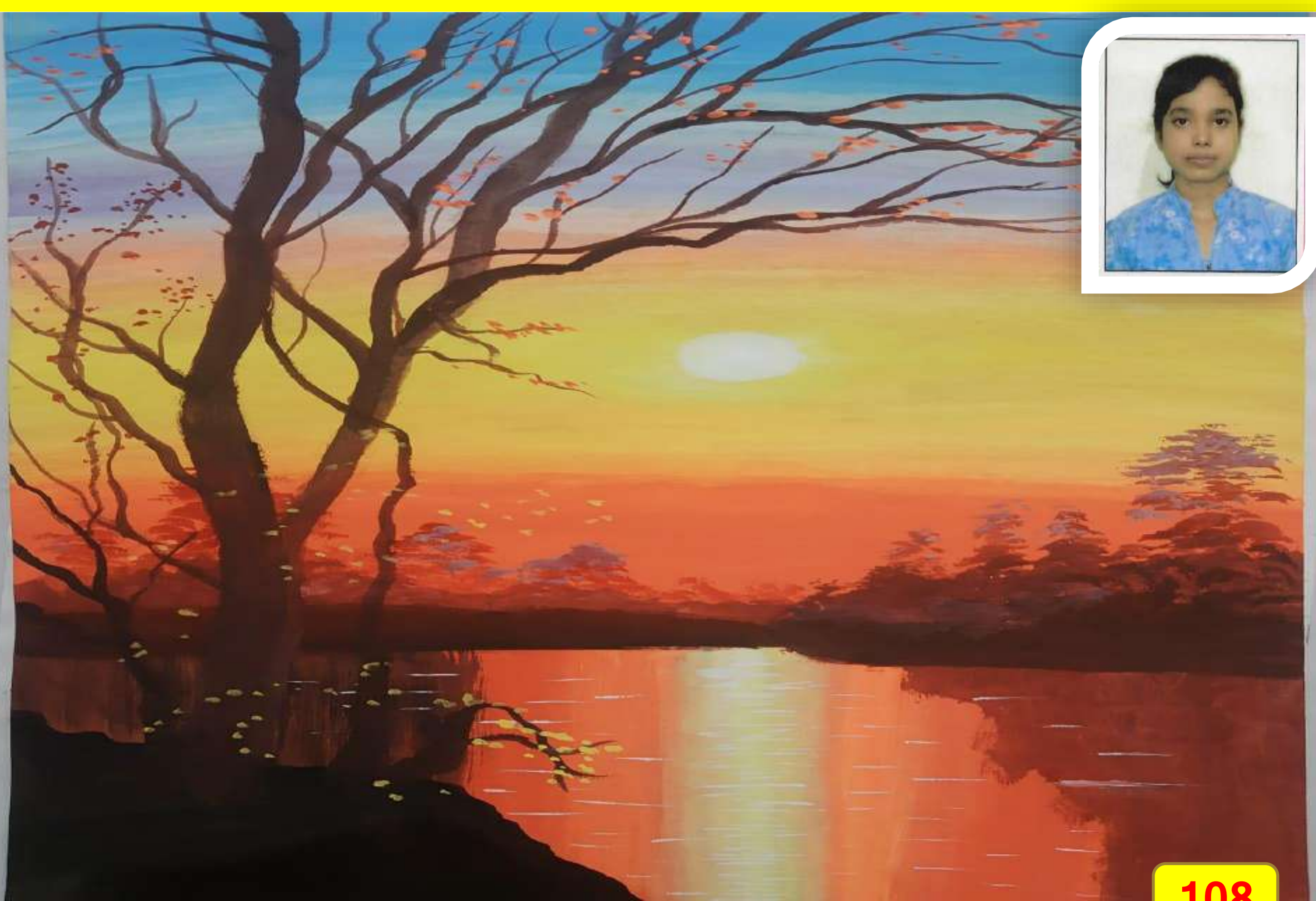

प्रियंका कुशवाहा, बहन – श्री विनय भारती. बहुकार्य कार्मिक, प्रशासन शाखा

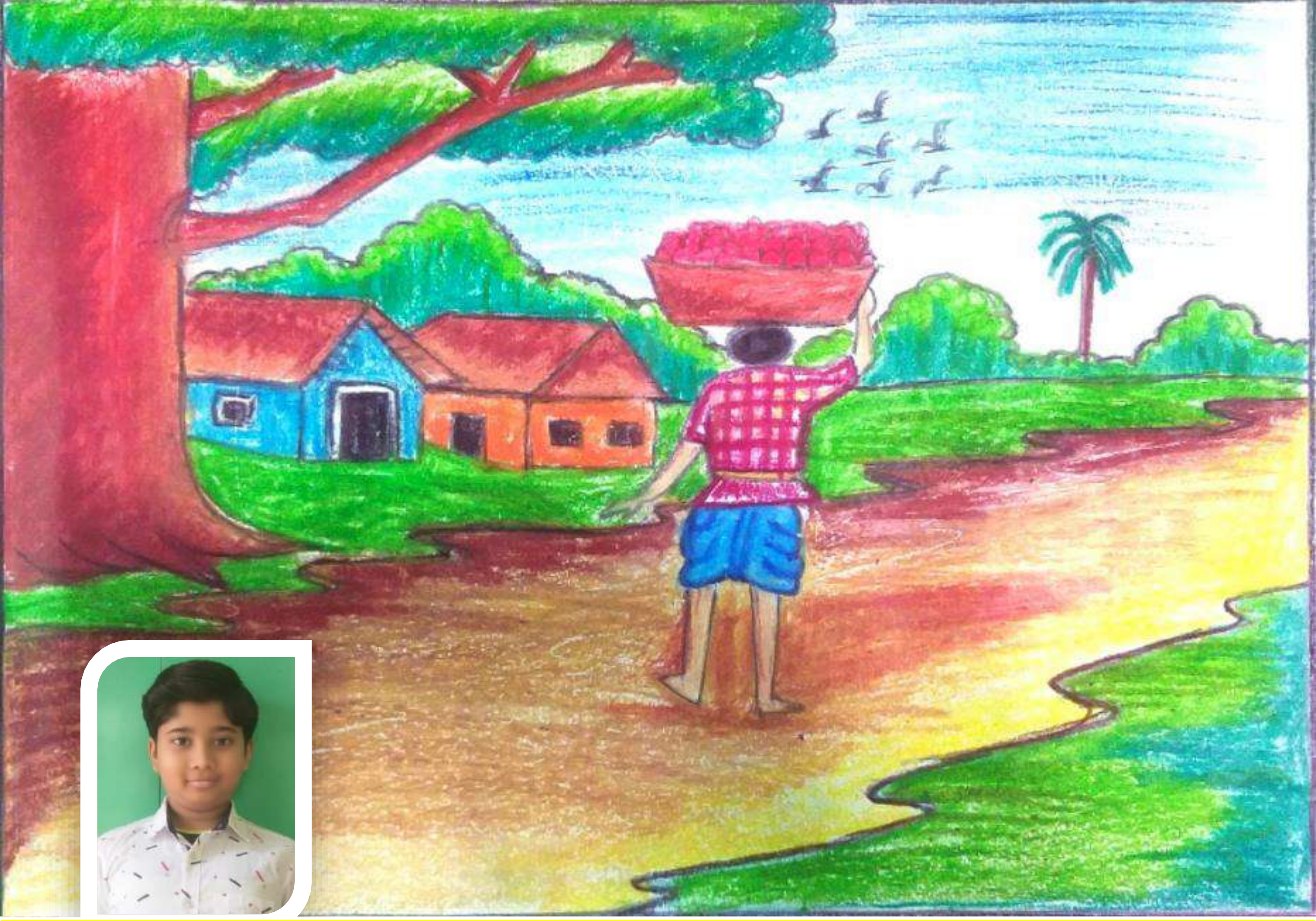

स्वप्निल दास, कक्षा – पंचम, पुत्र – श्री प्रोद्युत दास, सहायक, प्रशासन शाखा

प्रियम दास, कक्षा – सप्तम, पुत्र – श्री प्रसेनजीत दास, सहायक, लेखा शाखा

सुकन्या मजुमदार
प्रवर श्रेणी लिपिक
प्रशासन शाखा

क.रा.बी.नि.
ESIC

क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) अब
WhatsApp चैनल पर उपलब्ध

ईएसआई योजना या ईएसआईसी से जुड़े अपडेट जानने के लिए ईएसआईसी के WhatsApp चैनल से जुड़ें

जुड़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार

उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर

जी.बी.ब्लॉक, प्लॉट-VI, सेक्टर-III, सॉल्ट लेक,कोलकाता - 700097